ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - ९ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मई (प्रथम) २०१४

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

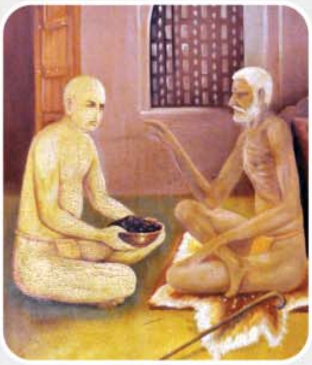

महर्षि दयानन्द के
जीवन की झलकियाँ

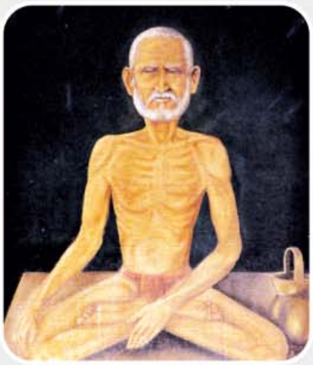

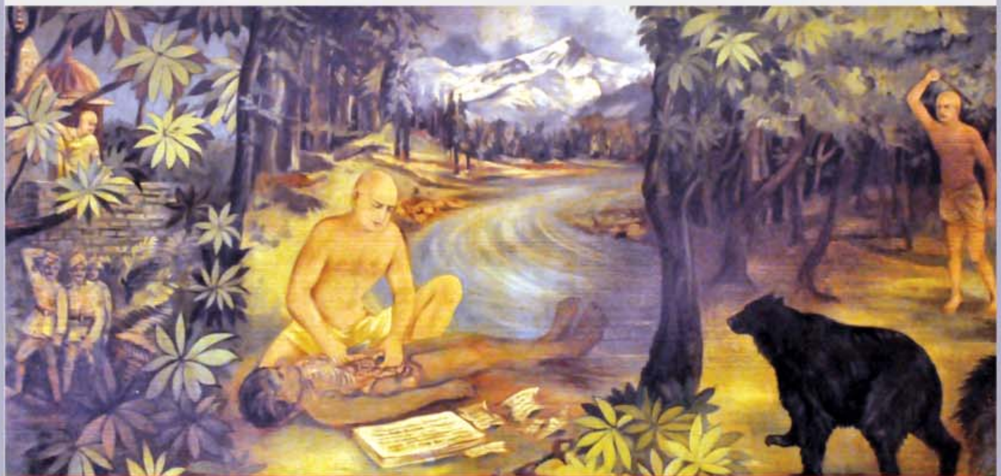

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ **अंक :** ९
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: वैशाख शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९४९ / ५९

परोपकारी

मई प्रथम २०१४

अनुक्रम

१. राष्ट्रीयता ही एक विचारधारा है	सम्पादकीय	०४
२. आत्मानुभूति कैसे करें?	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
४. सोमरस नशीला पेय नहीं	महात्मा चैतन्यमुनि	१४
५. कौन हैं हम भारतवासी?	ज्ञानेन्द्र मिश्र	२०
६. व्यावहारिकता-कितनी सार्थक	सुकामा आर्या	२३
७. Sardar Placed China 18 Years Ago		२७
८. राष्ट्रोन्नति में महिलाओं का योगदान	सुधा सावन्त	३१
९. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		३३
१०. जिज्ञासा समाधान-९२	आचार्य सोमदेव	३५
११. पुस्तक - परिचय		३७
१२. संस्था-समाचार		३८
१३. प्रतिक्रिया		४०
१४. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

राष्ट्रीयता ही एक विचारधारा है

चुनाव तो पहले भी होते रहे हैं। इस बार भी चुनाव का चक्र चलते बहुत समय हो गया है परन्तु चुनाव का उद्देश्य अभी बताया जा रहा है। चुनाव का उद्देश्य बताने वाला दल है कांग्रेस। इससे पहले प्रचार में यह घोषणा कहीं देखने में नहीं आई कि यह चुनाव विचारधारा के लिए लड़ा जा रहा है। अब तक चुनाव में मंहगाई, भ्रष्टाचार, विकास ही विचार के बिन्दु थे। अकस्मात् ये चुनाव विचारधारा की लड़ाई कैसे बन गये? कांग्रेस, भाजपा दोनों का चुनाव अभियान चल रहा है। मोदी का विकास और कांग्रेस के भ्रष्टाचार पर निरन्तर चर्चा हो रही थी, सम्भवतः कांग्रेस के पास इसका उत्तर नहीं बन रहा था। उसे लगा कि उसे आक्रामक होना चाहिए। इसके लिए कांग्रेस ने अपनी शैली बदल डाली। आज कांग्रेस के तीनों सूत्रधार एक ही भाषा बोलने में लगे हैं। उन्होंने देश को भ्रष्टाचार, महंगाई से मुक्त करने, देश को विकास की ओर ले जाने की बात करने के स्थान पर विचारधारा की लड़ाई पर चुनाव लड़ना उचित समझा। यहाँ महत्त्वपूर्ण बिन्दु है वह कौनसी विचारधारा है जिसके लिए कांग्रेस पार्टी चुनाव लड़ना चाहती है? इसके लिए सोनिया गाँधी के शब्दों पर दृष्टि डालना उचित होगा। चुनाव के प्रवाह को बदलने के विचार से सोनिया गाँधी ने दूरदर्शन से अपना एक सन्देश प्रसारित किया और देशवासियों को बताया कि आज का चुनाव एक विचारधारा के लिए लड़ा जा रहा है। इसमें श्रीमती सोनिया गाँधी ने अपनी विचारधारा तो बताई ही साथ-साथ भाजपा की विचारधारा भी स्वयं ही बता दी। वैसे तो ऐसा करना भी आवश्यक था क्योंकि विचारधारा की लड़ाई में अपने विचार के साथ दूसरे के विचार बताना आवश्यक होता है और दूसरे के विचार अपने विचार से विरोधी और विपरित न हो तो लड़ाई किस बात की। अतः श्रीमती सोनिया गाँधी ने अपनी विचारधारा को स्पष्ट करते हुए सन्देश में इस प्रकार कहा- ''कांग्रेस की विचारधारा हमें स्वस्थ, मुक्त लोकतन्त्र की तरफ ले जाती रहेगी, जिसका परिवर्तन के प्रति खुला नजरिया है। उनकी (भाजपा की) दृष्टि नफरत और झूठ से आच्छादित है, उनकी बांटने वाली एवं तानाशाही आधारित विचारधारा हिन्दुस्तानियत को नष्ट करने वाली है।''

विचारधारा की परिभाषा, परिभाषा नहीं है केवल परिभाषा के परिणाम की चर्चा है। इस परिभाषा में दूसरी जो बड़ी त्रुटि है वह है दूसरे पक्ष की परिभाषा को स्वयं द्वारा घड़ना। जो परिभाषा दूसरे पक्ष को मान्य नहीं है और उसने कोई ऐसी परिभाषा दी भी नहीं है फिर उस पक्ष के नाम से परिभाषा थोपना, यह अपने आप ही अपराध करना और स्वयं ही उसके लिए न्यायाधीश बन जाने, जैसी बात है। यदि इस परिभाषा को दुर्जनतोष न्याय से स्वीकार भी कर लें तब देखना होगा कि जिस परिभाषा से जो विचारधारा स्वीकार की गई है उसके आज तक हमें क्या परिणाम प्राप्त हुए हैं। दूसरे पक्ष की जो परिभाषा की गई है उसे भी देखना चाहिए कि इस परिभाषा को दूसरा पक्ष भी स्वीकार करता है तो उसका परिणाम आज तक क्या हुआ है? कांग्रेस जिस विचारधारा की बात करती है हम मानकर चलते हैं कि आजतक वह संगठन में, सत्ता में, समाज में उसका पालन करती रही होगी, व्यवहार में ला रही होगी। दूसरे पक्ष के पास भी संगठन है वे भी सत्ता में है, सत्ता के केन्द्र में भी रहे हैं, देखना चाहिए कि क्या सोनिया गाँधी ने जो उनकी विचारधारा की परिभाषा की है वे लोग वैसा करते रहे हैं, क्या उससे घृणा, वैमनस्य समाज में बढ़ा है।

हमें एक बात भली प्रकार समझनी होगी कि कोई भी पार्टी, कोई भी संगठन क्यों न हो उन सब का केन्द्र देश है, देश की जनता है, इस देश का समाज है। आपकी परिभाषा देश और समाज के लिए सम्पूर्ण रूप से लाभदायक है। सबके भले के लिए है, तो ही स्वीकार्य है अन्यथा स्वीकार्य नहीं हो सकती। इतना ही नहीं आपकी विचारधारा समाज में पक्षपात रहित नहीं है तो भी वह परिभाषा देश को मान्य नहीं हो सकती। जब हम देश और राष्ट्र की बात करते हैं तब इस देश की सारी जनता, सारी भूमि, सारे प्राणी, सारी सम्पत्ति और सभ्यता, संस्कृति भी उसमें सम्मिलित होती है। अब कांग्रेस की विचारधारा को तथाकथित या सोनिया कथित भाजपा की विचारधारा को समय की कसौटी पर कस कर देखना चाहिए। श्रीमती सोनिया गाँधी जिस विचारधारा की बात कर रही हैं उसे समझने के लिए चुनाव के घटनाचक्र पर दृष्टिपात करना उचित होगा। इधर सोनिया गाँधी ने कांग्रेस के चुनाव को विचारधारा का चुनाव घोषित किया। अमेठी में प्रियंका कहती है- मेरे भाई वरुण गाँधी ने परिवार के साथ विश्वासघात किया है, ऐसा अपराध

उनके बेटे ने भी किया होता तो उसे वे कभी क्षमा नहीं करती। इधर राहुल गाँधी अपनी चुनाव सभाओं में कह रहे हैं। भाइयो यदि मोदी को आप वोट देंगे, तो भाजपा आपको समाप्त कर देगी, देश में घृणा और हिंसा फैल जायेगी। इस प्रकार तीनों मिलकर अपनी विचारधारा को बचाने और दूसरे की विचारधारा का भय दिखाने में लगे हैं। समाज और देश में विचारधारा का अन्तर समझने से सरल वरुण गाँधी व प्रियंका की विचारधारा का अन्तर समझना अधिक सरल होगा। वैसे तो एक परिवार के लोग अनेक विचारधारा रखते हुए भी सहजभाव से रहते हैं परन्तु प्रियंका और वरुण की विचारधारा में विरोध ही नहीं अपितु परस्पर समाप्त करने की इच्छा रखने वालों जैसे अन्तर है। इस बात की कल्पना की जा सकती है। सोनिया गाँधी की परिभाषा से तो प्रियंका और वरुण की विचारधारा का अन्तर और विरोध तो पता नहीं लगता है। परन्तु वरुण गाँधी के साथ उनके चुनाव क्षेत्र में एक घटना घटी थी, उससे अन्तर का पता लगता है। चुनाव के समय समाज में अनेक वर्ग बन जाते हैं, परस्पर संघर्ष भी हो जाता है। ऐसा ही कुछ वरुण गाँधी के चुनाव क्षेत्र में घटा। किसी असंयमित मुसलमान ने हिन्दुओं को मार डालने की धमकी दे दी तो वरुण गाँधी ने आवेश में ऐसे व्यक्ति के हाथ काटने की बात कह दी। इस पर वरुण गाँधी पर कार्यवाही हुई, जेल भी जाना पड़ा, जो भी हो एक बात तो ये है। दूसरी ओर सोनिया गाँधी ने अपनी सरकार में अल्पसंख्यक विरोधी हिंसा बिल पास कराने के लिए एड़ी से चोटी का जोर लगा लिया परन्तु वे अपने कार्य में सफल नहीं हो सकी। इसमें सफल न होने का मुख्य कारण था कि इस विचारधारा के बिल में एक पक्ष को सर्वथा निर्दोष तथा दूसरे पक्ष को बिना कुछ किये दोषी सिद्ध किया गया था। यदि यही घटना विचारधारा का आधार है तो इस देश को यह विचारधारा कभी स्वीकार नहीं होनी चाहिए, न होगी। इसका मतलब तो इतना ही हुआ, एक विचारधारा गाँधी है दूसरी वाड्रा या राबर्ट। ये दोनों विरोधी हैं तो इस देश के लिए इससे अधिक घातक कुछ नहीं हो सकता। इस देश के लिए तो वही विचाराधारा स्वीकार्य होगी जो सबके कल्याण के लिए है। सबके साथ पक्षपात रहित और न्यायपूर्ण हो।

हमारे देश की समस्या है समाज में धर्म पर आधारित समाज। इसमें विडम्बना है जब धर्म और देश में विरोध उत्पन्न होता है तो अराष्ट्रिय भावना वाले लोग धर्म को राष्ट्र से ऊपर सिद्ध करते हैं या धर्म के आधार पर देश का विरोध करते हैं। पिछले दिनों आजम खान ने जितने भी वक्तव्य दिये उन सबमें यही देशद्रोह की बातें थी। आजम खान ने कहा- कारगिल की लड़ाई में कोई हिन्दू नहीं मरा, सभी मारे गये सैनिक मुसलमान थे। ऐसा वक्तव्य कैसे देश को स्वीकार्य हो सकता है। हमारे देश में मुख्य रूप से तीन तरह के मतों का बाहुल्य है। एक जो इस देश के प्रारम्भिक इतिहासक्रम से सम्बन्ध रखते हैं जिन्हें हम हिन्दुओं की श्रेणी में रखते हैं। दूसरे इस्लाम के मानने वाले, तीसरे हैं चर्च की उपासना करने वाले। हिन्दू तो परम्परा से इस देश का वासी है और यहाँ की विचारधारा को मानने वाला है, उसकी विचारधारा अच्छी है या बुरी, ये विचार का विषय नहीं है। शेष दोनों विचार बाहर से आये हैं और दोनों के साथ सत्ता का जुड़ाव रहा है। इस्लाम का तो मानना है- संसार के प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण इस्लाम स्वीकार किये बिना नहीं हो सकता। इसके लिए ही वे तलवार से अपना प्रचार करने में विश्वास करते हैं। इसलिए इस देश में सैंकड़ों वर्षों तक इस्लाम को मानने वालों का शासन रहा। यही कारण है कि मुसलमान के मन में सत्ता का भाव बना रहता है। यही स्थिति ईसाई समुदाय की भी है। यह मत अंग्रेज का स्वीकृत मत है अत: भारत पर अंग्रेजी सत्ता के रहते इस का खूब प्रचार-प्रसार हुआ। इस प्रकार मुसलमान ने इस देश पर शासन किया, उनके धर्म का इस देश में प्रचार-प्रसार हुआ। अंग्रेज ने शासन किया, ईसाइयत का प्रचार-प्रसार हुआ। यदि आप धर्म को देश से ऊँचा मानेंगे तो साम्प्रदायिक संघर्ष को कौन रोक सकता है।

अब इस देश की समस्या क्या है? इस देश के सभी वयस्क लोगों को मतदान का अधिकार है, उनके मतदान से सरकार का निर्माण होता है। तब उनके मतों की प्राप्ति के लिए सभी दल इसकी-उसकी टोपी ओढ़ते फिरते हैं। ऐसी परिस्थिति में आप कौनसी विचारधारा की बात करते हैं? इसमें हिन्दू पहले सत्ता के लिए हिन्दूपन का आश्रय नहीं लेता था, अहमद और मोहम्मद की विचारधारा के आक्रामक होने के कारण हिन्दू की बात की जाने लगी और इस देश में एक साम्प्रदायिक वातावरण का निर्माण हुआ। इसके रहते इनमें से किसी एक के रहते साम्प्रदायिक सद्भाव की कल्पना करना कठिन है। इसका हमें उपाय करना होगा। वह उपाय उनकी विचारधारा और हमारी विचारधारा नहीं होगी। वह विचारधारा खान की, राबर्ट की या किसी सिंह की नहीं हो, वह विचारधारा राष्ट्र की विचारधारा

होगी। वह धर्म हिन्दू, मुसलमान, ईसाई नहीं होगा, वह तो राष्ट्रधर्म होगा। वह विचारधारा राष्ट्रीयता की विचारधारा होगी। हमें संकीर्ण मत सम्प्रदाय की बात छोड़कर देश हित की बात करनी होगी। सोनिया गाँधी की विचारधारा देश हित में है तो भाजपा की या उनकी विचारधारा को देशहित में नहीं मानते, यह कहना इसलिए उचित नहीं है कि आपकी विचारधारा समस्त देशवासियों के लिये नहीं है। आप अल्पसंख्यक को देश की सम्पत्ति का पहला अधिकारी मानते हैं। आपको अल्पसंख्यक की नाराजगी दु:ख देती है परन्तु बहुसंख्यकों की मृत्यु की आप को चिन्ता नहीं होती। अत: कांग्रेस की विचारधारा देश का भला नहीं कर सकती। हाँ कोई भी किसी एक वर्ग का हो कर इस देश का कल्याण नहीं कर सकता। अत: हमें अपनी-अपनी संकीर्ण धर्मान्धिता को छोड़कर राष्ट्र धर्म को स्वीकार करना चाहिए।

ऐसा सम्भव है और यह मतदान से ही सम्भव है आज ऐसा करने का अवसर हमारे सामने है, भारत की जनता को उसका लाभ उठाना होगा तभी देश बच सकता है। कांग्रेस भय दिखाती है, भाजपा की सरकार आई, मोदी प्रधानमन्त्री बने तो यहाँ मुसलमानों के साथ अन्याय होगा। क्या भारत में कानून का राज्य नहीं है? क्या कानून के प्रयोग से किसी को अन्याय करने से रोका नहीं जा सकता? इसमें एक ही उदाहरण के दो पक्ष है- सोनिया गाँधी मोदी को एकदिन भी मुख्यमन्त्री नहीं देखना चाहती थी, फिर भी मोदी मुख्यमन्त्री क्यों बने रहे यह प्रजातन्त्र और संविधान की शक्ति है और आज मोदी प्रधानमन्त्री पद के दावेदार हैं तो संविधान के कारण। हमारे समाज में हम राष्ट्र को सर्वोपरि मान लें तो देश की सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है। इस देश की जनता ही सोनिया गाँधी को बनाती है और इस देश की जनता ही मोदी को बनाती है। आवश्यकता समाज को अच्छाई का समर्थन करने की है।

एक रोचक प्रसंग है जब वैदिक जीवन पद्धति में संस्कार किये जाते हैं तो विवाह संस्कार की विधि में तीन यज्ञ वर-वधू से कराये जाते हैं एक को अभ्यातान होम कहते हैं। इसे समृद्धि की कामना की जाती है उसे प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ की प्रेरणा दी जाती है। दूसरा होम जया होम होता है जो व्यक्ति को सदा आशावादी व विजय की कामना करने वाला बनने की प्रेरणा करता है। इसी प्रसंग में तीसरा होम कराया जाता है जिसे राष्ट्रभृत होम कहते हैं- इसके कराने का प्रयोजन है मनुष्य को अपनी उन्नति करने का अधिकार है, उसे समृद्ध बनने की स्वतन्त्रता है परन्तु निर्देश दिया गया है, यहाँ गृहस्थ को उपदेश दिया जाता है हमारी उन्नति, हमारी समृद्धि किसी भी प्रकार देश व समाज की दरिद्रता, दु:ख, अवनति का कारण न बने। भले ही हम कह सकते हैं हमारी राष्ट्र की अवधारणा आज की है या कल की परन्तु इतना तो सत्य है कि व्यक्ति की उन्नति समाज की विरोधी नहीं होनी चाहिए, हमारी विचारधारा राष्ट्र की विरोधी नहीं होनी चाहिए। हमारे यहाँ मनुष्यों की, प्राणियों की नहीं, समस्त संसार के सुख और कल्याण की कामना की गई, यही विचारधारा व्यक्ति, समाज, देश की पूरक बनाकर सबका भला कर सकती है- तभी हम कह सकते हैं-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

- धर्मवीर

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण..........

आत्मानुभूति कैसे करें?

- स्वामी विष्वङ्

प्रत्येक आध्यात्मिक व्यक्ति योगाभ्यास के माध्यम से आत्मानुभूति करना चाहता है। इसीलिए योगाभ्यासी योग को अपने जीवन का अंग बना लेता है। योग को जीवन का अंग बनाकर भी योग से कुछ दूर रहता है अर्थात् योग को जीवन का अंग तो बनाता है परन्तु योग के किसी एक विभाग को या दो विभागों को अथवा तीन विभागों को अपनाता है। केवल एक, दो या तीन विभागों को अपनाने मात्र से योगाभ्यास पूर्ण नहीं होता है, किन्तु बारी-बारी से योग के सभी (आठों) अंगों को अपनाना चाहिए। कोई योग के अंगों में से केवल आसन को अपनाता है, कोई आसन व ध्यान को अपनाता है, कोई प्राणायाम को अपनाता है, कोई स्वाध्याय को तो कोई ईश्वर समर्पण को अपनाता है। इस प्रकार एक, दो या तीन अंगों को अपना कर चलने मात्र से आत्मानुभूति नहीं हो सकती है। इसलिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इन सभी योग के अंगों का अनुष्ठान (पालन) करने पर ही आध्यात्मिक व्यक्ति को आत्मानुभूति होगी। प्राय: आध्यात्मिक व्यक्ति प्रात:काल व सायंकाल ध्यान करता है। ध्यान के काल में आत्मानुभूति (आत्म साक्षात्कार) के लिए संघर्ष करता रहता है। मन को आत्मा (परमात्मा) में एकाग्र करने के लिए पुरुषार्थ करता है, परन्तु मन आत्मा में एकाग्र नहीं हो पाता है। मन आत्मा में एकाग्र क्यों नहीं हो पा रहा है इसका यदि विश्लेषण किया जाये, तो निश्चित रूप से कारणों का बोध हो जाता है। जिन कारणों से मन एकाग्र नहीं हो रहा हो उन कारणों को जान कर-समझ कर उनको दूर किया जाये, तो निश्चित रूप से मन आत्मा में एकाग्र हो जायेगा। साधक जितना पुरुषार्थ ध्यान के काल में मन को आत्मा में एकाग्र करने के लिए करता है यदि उतना पुरुषार्थ व्यवहार काल में कर लेता है, तो मन को आत्मा में एकाग्र करने के लिए ध्यान काल में उतना पुरुषार्थ की अपेक्षा नहीं रहेगी। सरलता से, कम से कम पुरुषार्थ से मन आत्मा में एकाग्र हो जायेगा। व्यवहार काल के उत्तम बनने के पीछे पुरुषार्थ जुड़ा हुआ है। व्यवहार काल में क्या पुरुषार्थ किया जाता है, जिससे ध्यान काल में मन एकाग्र हो सकता है? इसका समाधान यह है कि साधक व्यवहार काल में जिस किसी (मनुष्य अथवा मनुष्येतर पशु आदि) से भी व्यवहार करे तो आत्मीयता (अपनेपन) से व्यवहार करे अर्थात् प्राणी मात्र के प्रति वैर-द्वेष-ईर्ष्या भाव को त्याग करते हुए व्यवहार करे। जिससे सब के साथ अच्छा-उत्तम व्यवहार बना रहे। सब के साथ उत्तम व्यवहार करने से मन में प्रसन्नता रहेगी, मन शान्त रहेगा, मन में द्वेष-ईर्ष्या-वैर वाले कोई भाव-विचार उत्पन्न नहीं होंगे। ऐसी स्थिति में मन आत्मा में एकाग्र हो जायेगा। मन के एकाग्र होते ही आत्मानुभूति की स्थिति उत्पन्न होती है।

ध्यान के काल में मन को एकाग्र करने के लिए पुरुषार्थ करने की अपेक्षा सत्य को समझने और सत्य को अपने अन्दर धारण करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। मनुष्य किसी-किसी विषय में सत्य को धारण करता है परन्तु सभी विषयों में धारण नहीं कर पाता है। आत्मानुभूति के सन्दर्भ में सभी विषयों में सत्य को धारण करना पड़ता है। जिस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार आत्मानुभूति के लिए भी सत्य की आवश्यकता पड़ती है। जिस प्रकार शरीर को ऊर्जा चाहिए यह सत्य है, उसी प्रकार आत्मानुभूति के लिए सत्य चाहिए यह भी सत्य है। परन्तु साधक शरीर वाले सत्य को स्वीकार कर पालन करता है, लेकिन आत्मानुभूति के लिए सत्य को स्वीकार करके भी पालन नहीं करता है। इसीलिए सत्य को छोड़कर मन को एकाग्र करने में लगा हुआ है, किन्तु मन एकाग्र नहीं होता पर पुरुषार्थ निरन्तर चलता रहता है। मन को एकाग्र करने वाले पुरुषार्थ को सत्य में लगा कर सत्य को अपनाए, जिससे आत्मानुभूति कर सके। साधक स्वयं के प्रति सत्याचरण करे अर्थात् स्वयं के प्रति असत्य आचरण न करे। क्या कोई स्वयं के प्रति भी असत्य आचरण करता है? हाँ करता है स्वयं में सामर्थ्य के होते हुए भी सामर्थ्य नहीं है, ऐसा मानता है, स्वयं में बल होते हुए भी नहीं है, ऐसा मानता है, योग्यता के होते हुए भी नहीं है, ऐसा स्वीकार करता है। इस प्रकार स्वयं के अनेक विषयों में इसी प्रकार मानता है। जो मनुष्य स्वयं के प्रति असत्य आचरण करता हो, वह मनुष्य अन्यों के प्रति असत्य आचरण नहीं करेगा, इसकी आशा कैसे की जा सकती है। व्यवहार काल में प्राणी मात्र के साथ सत्याचरण किये बिना मन प्रसन्न नहीं रह सकता। असत्याचरण के कारण मन में विभिन्न प्रकार

के विचारों की शृंखला चल पड़ती है, जिस कारण मन शान्त नहीं रह पाता। ऐसी स्थिति में साधक को आत्मानुभूति किस प्रकार हो पायेगी अर्थात् नहीं होगी। आत्मानुभूति करने वाले साधक को चाहिए कि समस्त आत्माओं को एक जैसा अनुभव करना चाहिए। अर्थात् किसी को अपना और किसी को पराया न मानते हुए सबको एक जैसा अनुभव करे। जिससे छोटे-छोटे स्वार्थों से ऊपर उठकर प्राणी मात्र को एक समान अनुभव करता हुआ सब के साथ सत्याचरण करने से मन प्रसन्न रहेगा। मन के प्रसन्न रहने से मन में शान्ति होगी। मन के शान्त होने से मन में विभिन्न प्रकार के विचार उत्पन्न नहीं होंगे। जिससे मन एकाग्र हो कर आत्मानुभूति कराने में सक्षम हो पायेगा। इसलिए मन के किसी भी कोने में असत्य बसा हुआ नहीं होना चाहिए **'मनः सत्येन शुध्यति'** इस मनु महाराज के वचनानुसार मन सत्य से शुद्ध हो कर ही आत्मानुभूति कराने में समर्थ होता है।

आत्मानुभूति करने के इच्छुक साधक को व्यवहार काल में व्यवहार करते हुए अस्तेय (चोरी का त्याग) का पालन करना पड़ता है। किसी भी व्यवहार में अन्याय न हो, चाहे किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित हो या समाज से सम्बन्धित हो या राष्ट्र से या विश्व से सम्बन्धित हो। किसी भी प्रकार से चोरी का त्याग सूक्ष्मता से करना पड़ता है। अनेक बार मनुष्य बड़े-बड़े विषयों में चोरी से बच जाता है, परन्तु छोटे-छोटे विषयों में चोरी कर बैठता है। अनेक बार अनजाने में चोरी कर लेता है और अनेक बार जानबूझ कर चोरी कर लेता है लापरवाही से चोरी का भागी बन जाता है, आलस्य के कारण चोरी कर लेता है। आलस्य, प्रमाद (लापरवाही) से जो चोरी हो रही होती है।, उसे चोरी नहीं मानता, यह एक बहुत बड़ी भ्रान्ति है। जिस कारण साधक मन को एकाग्र नहीं कर पाता है। उदाहरण के लिए मनुष्य व्यवहार काल में प्रतिदिन में आने वाली वस्तुओं (आटा, चावल, चीनी आदि) का क्रय करता है, परन्तु उनका बिल नहीं लेता है। बिल न लेना भी चोरी कहलाता है, चाहे जाने-अनजाने में हो रहा हो या आलस्य, प्रमाद से हो रहा हो। चोरी तो चोरी ही कहलायेगा। बिल न ले कर दुकानदार को और अधिक गलत करने का अवसर प्रदान किया जाता है। आजकल प्रायः सभी वाहनों का प्रयोग करते हैं, परन्तु सभी लोग वाहनों में पेट्रोल, डीजल डलवा कर बिल नहीं लेते हैं यह भी चोरी को बढ़ावा देने का कार्य होने से स्वयं के लिए भी चोरी ही कहलायेगी। इसलिए साधना (ध्यान) करने वाले साधक को पूर्ण रूप से चोरी का त्याग करना पड़ता है, जिससे आत्मानुभूति करने में किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न नहीं होना चाहिए।

जिस प्रकार से पूर्ण रूप से अहिंसा का पालन, सत्य का पालन, अस्तेय का पालन करना है, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य का पालन भी पूर्ण रूप से करना पड़ता है। जो व्यक्ति संयम नहीं कर सकता, वह व्यक्ति मन को एकाग्र कैसे कर सकता है? इसलिए संयम से ही मन को रोका जा सकता है और संयम भी पूर्ण रूप से होना चाहिए। अन्यथा आत्मानुभूति नहीं हो पायेगी। आत्म-साक्षात्कार के लिए पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन होना चाहिए। ब्रह्मचर्य पालन में विकल्प नहीं है, इसलिए महर्षि पतञ्जलि ने ब्रह्मचर्य को सार्वभौम सिद्धान्त (नियम) माना है। इस सिद्धान्त का कोई विकल्प नहीं है। यहाँ पर कोई यह न समझे कि गृहस्थी व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार नहीं कर पायेगा, ऐसा नहीं है किसी भी आश्रम में रहने वाला व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार कर सकता है, परन्तु गृहस्थी गृहस्थ के कर्त्तव्यों को करते हुए आत्म-साक्षात्कार नहीं कर पायेगा। हाँ गृहस्थ के कर्त्तव्यों को पूरा (सन्तानोत्पत्ति) करके फिर पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए आत्म-साक्षात्कार कर सकता है। सन्तानोत्पत्ति का उद्देश्य नहीं है फिर भी ब्रह्मचर्य का स्खलन करते जाये और आत्म-साक्षात्कार के लिए पुरुषार्थ करते जाये। ऐसी स्थिति में आत्मानुभूति नहीं कर पायेगा। इसलिए सार्वभौम सिद्धान्तों का उल्लन्घन किसी भी आश्रमवासी के लिए हानिकारक है। इस कारण सार्वभौम सिद्धान्तों का पालन करना प्रत्येक मनुष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। ब्रह्मचर्य रूपी संयम से मन प्रसन्न रहेगा और प्रसन्न मन शान्त रहेगा। शान्त मन में विविध विचार उत्पन्न नहीं होते हैं। इसलिए मन आत्मा में सरलता से एकाग्र होता है और आत्मानुभूति में किसी भी प्रकार का विघ्न बाधित नहीं करता।

जो मनुष्य आध्यात्मिक मार्ग में चलते हुए योगाभ्यास के माध्यम से आत्मानुभूति करना चाहता है, ऐसे व्यक्ति के लिए अपरिग्रह (परिग्रह न करना) का पालन करना होता है। साधनों के संग्रह को परिग्रह कहते हैं। यद्यपि मनुष्य बिना साधनों के संग्रह के अपने लक्ष्य को पूर्ण नहीं कर सकता, परन्तु सीमित साधनों (आवश्यक साधनों) की अपेक्षा प्रत्येक व्यक्ति को रहती है। आवश्यक साधन का अभिप्राय है जिनके बिना मनुष्य जीवित न रह सके और जिनके बिना ईश्वर प्राप्ति रूप लक्ष्य पूर्ण न हो सके। इन आवश्यकताओं में भी व्यक्ति विशेष, अवस्था (आयु)

विशेष, परिस्थिति विशेष, समय विशेष को ध्यान में रख कर भी देखा जाता है। मनुष्य के पास शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान आदि अनेक प्रकार की योग्यताएँ हैं, इसलिए उन योग्यताओं का उपयोग करते हुए अनेक साधनों का संग्रह कर लेता है। अनेक साधन (अनावश्यक साधन) एक व्यक्ति के लिए अधिक होते हैं, परन्तु उन अधिक साधनों को साधन रहित व्यक्तियों को न देकर स्वयं के पास ही रखना हानिकारक है। परन्तु साधन सम्पन्न व्यक्ति उन साधनों का प्रयोग न कर प्राय: दुरुपयोग करते हैं। जिससे साधन रहित व्यक्तियों को दु:ख मिलता है। यदि अधिक साधन होने पर उन्हें साधन रहित व्यक्तियों को दिया जाये, तो उनका उपकार होगा और स्वयं का पुण्य कर्म बन जायेगा। यदि अन्यों को देने की इच्छा न हो, तो अधिक साधन एकत्रित करने में पुरुषार्थ न करके बचे हुए पुरुषार्थ को ईश्वर प्राप्ति के लिए लगा देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करते हैं तो पाप के भागी बन जाते हैं। इसलिए मनुष्य को परोपकार भी करना चाहिए। साधन सम्पन्न व्यक्ति परोपकार भी न करे और स्वयं के द्वारा उपार्जित साधनों का स्वयं भी प्रयोग न करे, तो प्राय: मनुष्य आलसी, प्रमादी बन कर पुरुषार्थ हीन हो कर स्वयं की और अन्यों की भी हानि करता है। यदि साधनों की भी अति हो जाये, तो मनुष्य ईश्वर प्राप्ति से बहुत दूर हो जाता है। अधिक साधनों के लिए मनुष्य हिंसा, झूठ, चोरी, असंयम का सहारा लेकर अन्याय, अधर्म पूर्वक साधनों को एकत्रित करने की चेष्टा करता है और सफल भी होता है। साधन सम्पन्नता से भौतिक सुख को प्राप्त तो करता है, परन्तु विभिन्न प्रकार के दु:खों, कष्टों, समस्याओं से घिरा रहता है। आवश्यकता से अधिक साधनों को एकत्रित करने में बहुत अधिक दु:ख होता है, किसी कवि ने कहा भी है कि

अर्थानामर्जने दु:खमर्जितानां च रक्षणे।
आये दु:खं व्यये दु:खं धिगर्थान् कष्टसंश्रयान्।।

अर्थात् आवश्यक साधनों से अधिक साधन एकत्रित करने में दु:ख होता है। यदि अधिक साधन हो भी जाये तो उनकी रक्षा करने में विभिन्न प्रकार के दु:ख आते हैं। अधिक साधनों को और अधिक बनाने में भी दु:ख होता है और यदि अधिक साधन घट जाये तो भी दु:ख होता है। इसलिए इतने अधिक दु:ख देने वाले ये अधिक साधन हमें नहीं चाहिए। इन साधनों को धिक्कार है इसलिए योगाभ्यासी परिग्रह न करता हुआ पूर्ण अपरिग्रह का पालन करता है। जिससे मन में विभिन्न विचारों को स्थान न दे कर मन को शान्त रखता हुआ प्रसन्न रहता है। इस कारण प्रसन्न मन एकाग्र हो कर आत्मानुभूति करने में समर्थ हो जाता है।

मन को एकाग्र किये बिना आत्मानुभूति होती नहीं है और एकाग्रता मन को शुद्ध (शौच) किये बिना नहीं आती है। मन शुद्ध होता है सत्य को स्वीकार करने से। मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार से संलिप्त रहता ही है, इस कारण इन काम, क्रोध आदि शत्रुओं के रहते हुए मनुष्य असत्य को त्याग नहीं कर पाता है और असत्य के कारण भी काम, क्रोध आदि शत्रु उत्पन्न होते हैं। इन सभी दोषों (मलों) को दूर करना पड़ता है, जिससे मनुष्य सत्य को धारण करने में समर्थ हो जाता है। ये दोष मन को एकाग्र होने नहीं देते हैं, इन दोषों के कारण एक प्रकार से मन मलिन हो जाता है। वह मल मन को विचलित करता रहता है, मन को विक्षिप्त, मूढ़ व क्षिप्त करता रहता है। इसलिए जब तक मन में मल रहेगा तब तक मन एकाग्र नहीं हो पायेगा। प्राय: मनुष्य अशुद्धि (मल) को दूर नहीं करता है, यदि दूर भी करता है तो मन के मल को दूर न कर शरीर व वाणी के मल को ही दूर करने में लगा रहता है। यद्यपि शरीर व वाणी के मल को दूर करना चाहिए, परन्तु जितनी आवश्यकता मन के मल को दूर करने में है, उतनी आवश्यकता शरीर, वाणी के मल को दूर करने में नहीं है। अवस्था (आयु) परिस्थिति, काल आदि को ध्यान में रख कर किसी कारण से शरीर, वाणी की शुद्धि न भी हुई हो तो भी चल सकता है अर्थात् प्रयोजन की सिद्धि हो सकती है, परन्तु मन की शुद्धि के बिना प्रयोजन की सिद्धि कभी भी नहीं हो सकती है। इसलिए बाहर (शरीर, वाणी) की शुद्धि में उतना ध्यान न देकर अन्दर (मन) की शुद्धि में विशेष ध्यान देना चाहिए। यहाँ पर कोई यह न समझे कि बाहर की शुद्धि नहीं करनी चाहिए, बल्कि यह समझा जावे कि मुख्यता अन्दर की शुद्धि में है। यदि बाहर और अन्दर दोनों की शुद्धि में एक की ही शुद्धि करने का अवसर मिले, तो बाहर की न कर अन्दर की ही करना चाहिए। इस रूप में ही अभिप्राय लेना चाहिए। अनेक बार मनुष्य मुख्यता को छोड़ कर गौण को अपनाने लगता है। प्राय: मनुष्य कम पुरुषार्थ की ओर बढ़ता है अर्थात् अधिक पुरुषार्थ से बचना चाहता है। जो साधक योगाभ्यास के माध्यम से आत्मानुभूति करना चाहता है, तो उसे अधिक पुरुषार्थ वाले मन की शुद्धि की ओर आगे बढ़ना चाहिए। जिससे साधक शीघ्रता से मन को एकाग्र कर सके और विभिन्न विचारों को रोक कर शान्त हो सके। शान्त मन से प्रसन्न हो कर मन को आत्मा में एकाग्र करके आत्मानुभूति

कर सके। इसलिए योग साधक को पूर्ण रूप से शौच को अपनाना चाहिए। जिससे मन बिना किसी बाधा के आत्मा को आत्मानुभूति करा सके।

कोई भी मनुष्य बिना कर्म किये नहीं रह सकता है। जितना भी कर्म करता है, उस कर्म का परिणाम (फल) उसे अवश्य मिलता है। यह अलग बात है कि वह फल कब मिलेगा। यदि वर्तमान में जिस किसी भी कर्म का फल मनुष्य को मिलता है, उस फल से प्राय: मनुष्य सन्तुष्ट नहीं हो पाता है। हताश-निराश होता है, खिन्न रहता है, असन्तोष चेहरे में स्पष्ट दिखाई देता है। मनुष्य अपने कर्मों के फलों से कभी प्रसन्न नहीं हो पाता है। ऐसा इसलिए होता है कि वह व्यक्ति अपनी इच्छा, ज्ञान, बल आदि योग्यताओं के आधार पर ही कर्म करता है अर्थात् जितनी इच्छा से, जिस प्रकार के ज्ञान से, जितनी शक्ति आदि से पुरुषार्थ करता है। उसका फल भी उसी के अनुरूप दिया जाता है। फिर भी मनुष्य असन्तुष्ट रहता है, तो उस मनुष्य की अज्ञानता ही कहलायेगी। मनुष्य को जितना फल प्राप्त होता है, उसी में सन्तुष्ट हो कर और अधिक फल पाने के लिए और अधिक इच्छा, ज्ञान, बल आदि को उत्पन्न करे, जिससे अधिक फल पा सके। मनुष्य यह जान नहीं पा रहा है कि सन्तोष करने से जितना सुख मिलता है उतना सुख संसार के किसी भी वस्तु से नहीं मिल सकता। इसलिए महर्षि पतञ्जलि ने कहा है कि **'सन्तोषादनुत्तमसुखलाभः'** अर्थात् संसार में सांसारिक पदार्थों से अधिक सुख सन्तोष से मिलता है। इस कारण योग साधक पूर्ण सन्तोष का पालन करता है, तो उसका मन विचलित नहीं होता है और मन में व्यर्थ विचार उत्पन्न नहीं होते हैं। जिससे मन सरलता से एकाग्र हो जाता है और एकाग्र मन आत्मानुभूति कराने में समर्थ हो जाता है।

संसार में प्रत्येक मनुष्य तप करता है, परन्तु आत्मानुभूति के लिए जितना तप करना चाहिए उतना तप न करने के कारण योग साधक आत्मानुभूति नहीं कर पा रहा है। महर्षि वेद व्यास के अनुसार बिना विशेष तप के कोई भी साधक आत्मानुभूति नहीं कर सकता। शारीरिक व वाचनिक तप तो बहुत सारे लोग करते हैं, परन्तु मानसिक तप कोई-कोई कर पाता है। मानसिक आवेगों को रोके रखना प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं है, क्योंकि शारीरिक व वाचनिक तप अन्यों को दिखाई देता है। इसलिए व्यक्ति दिखावे के लिए बहुत कुछ तप करता है, परन्तु मानसिक तप स्वयं व परमेश्वर के अतिरिक्त किसी को दिखाई नहीं देता है। इसलिए व्यक्ति मानसिक तप नहीं कर पाता है। शारीरिक और वाचनिक तप करके व्यक्ति उत्कृष्ट तपस्वी, तो बन जाता है पर मानसिक रूप से उत्कृष्ट भोगी बना रहता है। जब तक मानसिक भोग को दूर नहीं किया जाता तब तक मन को एकाग्र नहीं किया जा सकता। इसलिए साधक को विशेष रूप से मानसिक तप को अत्यधिक करके मन को शान्त करना चाहिए। जिससे मन एकाग्र हो कर आत्मानुभूति करा सके। क्योंकि तप से ही योग की सिद्धि होती है भोग से कदापि नहीं।

मनुष्य प्राय: स्वाध्याय से बचता है। विशेष कर आत्मा, परमात्मा से सम्बन्धित पुस्तकों से बहुत दूर रहता है। कुछ लोग आत्मानुभूति तो करना चाहते हैं, परन्तु आत्मा, परमात्मा से सम्बन्धित शास्त्रों को पढ़ना नहीं चाहते हैं। महर्षि वेदव्यास ने स्पष्ट कहा है कि मोक्ष को दिलाने वाले शास्त्रों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। बिना शास्त्र अध्ययन के मनुष्य को ज्ञान नहीं होता है और बिना ज्ञान के विवेक, अभ्यास, वैराग्य के लिए मनुष्य पुरुषार्थ नहीं करता है। इसलिए शास्त्रों का अध्ययन अवश्य करते रहना चाहिए, क्योंकि निरन्तर स्वाध्याय करते रहने से मनुष्य का मन विचलित नहीं होता है। स्वाध्याय मनुष्य को निरन्तर उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य आदि का निरन्तर बोध कराता रहता है। शास्त्रों के स्वाध्याय से साधक अपने मन को सरलता से एकाग्र करने में समर्थ होता है। जिससे मन आत्मा में एकाग्र हो कर आत्मानुभूति करा देता है।

स्वाध्याय निरन्तर करने वाले साधक के समक्ष परमेश्वर के उपकारों का सतत् बोध होता है। जिससे साधक स्वयं को ईश्वर के प्रति समर्पित कर देता है। जिस साधक ने समर्पण किया हो, वह कोई भी कार्य करे, वह कार्य ईश्वर की आज्ञा के अनुरूप ही करता है। ईश्वर की आज्ञा के अनुरूप कर्मों को करने वाला साधक कभी अनुचित कर्म नहीं करेगा। जिससे साधक का मन विचलित नहीं होता। साधक प्रसन्नता से रहता है, इस कारण साधक का मन शान्त रहता है। शान्त मन से मन को आत्मा में एकाग्र करता है और आत्मानुभूति कर लेता है। इस प्रकार आत्मानुभूति करने के लिए यम और नियम अत्यन्त आवश्यक हैं। जिनके प्रति साधक ध्यान न देकर योग के अन्य अंगों में अधिक ध्यान देकर आत्मानुभूति से वञ्चित रहता है।

- ऋषि उद्यान, पुकर मार्ग, अजमेर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

कल्याण का आर्यसमाज पर वार, प्रहार:- इस विषय पर हम पहले भी कुछ लिख चुके हैं। कल्याण ने मूर्त्तिपूजा की वकालत करते हुए पौराणिकों की घिसी-पिटी युक्ति दोहराई है कि ध्यान लगाने के लिए-एकाग्रता के लिए साकार मूर्त्ति का सामने होना आवश्यक है। हम पहले भी सांख्य दर्शन के प्रमाण से इस कथन का प्रतिवाद कर चुके हैं। यह तो ऐसी सोच है जिसके लिए कवि ने लिखा है:-

अन्धे को अन्धेरे में बड़ी दूर की सूझी

मन की एकाग्रता के लिए मूर्ति में मन टिकाने की जो बात श्रीकृष्ण महाराज तथा योग दर्शनकार को न सूझी वह कल्याण के लेखक जी को सूझ गई। ऋषि दयानन्द ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि यह जगत् साकार ही तो है। परिवार में पत्नी, पुत्र आदि तथा घर-बार व सम्पदा सब साकार ही तो हैं फिर एकाग्रता की समस्या क्यों बनी हुई है?

अति प्राचीन काल से साधु, महात्मा, योगी, ज्ञानी, ध्यानी तथा गृहस्थी भी वनों-पर्वतों में सांसारिक भीड़भाड़ से दूर जाकर साधना क्यों करते हैं? एकान्त में ईश्वर का ध्यान किसलिए?

हमारे शास्त्रार्थों तथा शास्त्रार्थ महारथियों पर व्यंग्य कसने वाले लेखक जी को याद दिला दूँ कि लाहौर सनातन धर्म कॉलेज के प्रिंसिपल रहे डॉ. रामदास खाँ धर्मच्युत होकर नमाज़ी बन गये। न मूर्तियाँ कुछ कर पाईं और न मूर्तिपूजक। उसे वापस लाने का यश लूटने वाले हमारे शास्त्रार्थ महारथी ही थे। मास्टर सुन्दरसिंह के साथ सेना का एक और सिख जवान दिल से नमाजी बन चुके थे, बस नाम बदलना शेष था। तब सिंघ सभा स्यालकोट ने आर्यसमाज स्यालकोट को शास्त्रार्थ समर के सेनानी पण्डित लेखराम जी को बुलाने को कहा। महोदय! हमारे शास्त्रार्थ से दोनों सिख बच गये। महर्षि ने ईसाई स्कूल अमृतसर के मास्टर ज्ञानसिंह को पक्का आर्य बनाया। उसने आगे अपनी शास्त्रार्थ विषयक ऊहा से सैंकड़ों हिन्दुओं-सिखों को जो धर्मच्युत हो चुके थे, शुद्ध करके नरतन को सफल बनाया। अब भी यदि आप हमारे शास्त्रार्थ महारथियों को कोसते हैं तो आप जैसे मन्दभागी मतिबन्द को कौन समझा सकता है? भगवान् ही आपको सद्‌बुद्धि दें। हमारे प्रारब्ध में भी यही कुछ है कि आपके वार-प्रहार का शिकार होना और फिर भी आपसे प्यार करना और आपकी रक्षा के लिए जीना व मरना। आप छाती पर हाथ धर कर यह तो बतायें कि आधुनिक काल में आपके किसी शंकराचार्य अथवा स्वामी विवेकानन्द जी आदि महात्मा की शिष्य परम्परा में धर्म रक्षा व जाति रक्षा में किसने प्राण दिये? वह भक्ति उपासना क्या हुई जिससे आत्मबल, निडरता व बलिदान की भव्य भावना ही न जागी?

इनके प्रूफ़ किसने पढ़े?- विरोधी दोहरा-दोहरा कर आक्षेप करते व पूछते हैं। हम बीसियों बार उत्तर दे चुके हैं। एक मियाँ जी की एक पुस्तक हमारे सामने आई उनका आक्षेप वही पुराना है कि सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम दो समुल्लास ऋषि के जीवन काल में नहीं छपे थे सो ये बाद में लिखे गये। सत्यार्थप्रकाश की अन्त:साक्षी इस आक्षेप का प्रतिवाद करती है। पत्र व्यवहार भी इसका खण्डन करता है।

हम आक्षेप करने वालों को बताना चाहते हैं कि आपकी आपत्ति का उत्तर हम तो निरन्तर देते आये हैं, आपसे अनेक बार पूछा जा चुका है कि वर्तमान रूप में जो कुरान है वह पैगम्बर ने तैयार करके दिया? क्या यह पैगम्बर के जीवन में प्राप्य था? **इसके प्रूफ़ पैगम्बर ने पढ़े अथवा फरिश्ते ने या अल्लाह मियाँ जी ने?** इसका सप्रमाण समाधान कीजिये।

मित्रो! बाइबिल भी ईसा के जीवनकाल में तैयार न हो सका। यह तथ्य मानते हो या नहीं? फिर यह आसमानी किताब कैसे हुई? महात्मा बुद्ध ने कोई पुस्तक लिखी ही नहीं। **उनका धम्मपद भी धर्म ग्रन्थ माना जावे अथवा नहीं?**

सिख भाइयों का ग्रन्थ साहब तो पाँचवें गुरु श्री अर्जुनदेव जी ने तैयार करवाया। फिर गुरु गोविन्दसिंह जी ने श्री गुरु तेग़बहादुर जी तक अन्य गुरुओं की वाणी भी साथ संकलित कर दी। भक्तों की वाणी जो ग्रन्थ साहब में है, वह क्या भक्तों के बाद नहीं ली गई? इस प्रकार तो ग्रन्थ साहब की प्रामाणिकता पर भी आप प्रश्न चिह्न लगा देंगे। बिना सोचे-विचारे आक्षेप करेंगे तो आपको कुछ लाभ नहीं होगा। सत्य की हत्या ही होगी।

पं. रामचन्द्र देहलवी जी का ऐतिहासिक भाषण:- तार्किक शिरोमणि पूज्य पं. रामचन्द्र जी देहलवी अपने निधन से कोई दस वर्ष पूर्व प्रयाग आमन्त्रित किये गये।

उपाध्याय जी के आकर्षण से उस काल खण्ड में वे कई बार प्रयाग प्रचारार्थ गये। उनकी ऊहा तथा उनके मधुर स्वभाव के कारण कई उच्च शिक्षित तथा प्रभावशाली व्यक्ति वहाँ उनके भक्त प्रशंसक बन गये।

प्रयाग के गाँधी प्रार्थना समाज के अध्यक्ष श्री बृजेश पाण्डे भी एक ऐसे सज्जन थे। आपने मुट्ठीगंज के क्रिश्चन डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल से पं. रामचन्द्र जी का व्याख्यान करवाने की प्रार्थना की। वह पूज्य देहलवी जी का अपने यहाँ व्याख्यान करवाने को कतई तैयार नहीं था। श्री पाण्डे के बहुत दबाव देने पर वह मान तो गया परन्तु एक कड़ी शर्त लगा दी। उसने कहा जो विषय मैं दूँ उसी पर ही उन्हें बोलना होगा। उसके मन में भय का भूत बैठा था कि किसी दार्शनिक विषय पर बोलते हुए देहलवी जी यहाँ वैदिक धर्म की छाप छोड़ जायेंगे।

पाण्डे जी ने उनकी यह शर्त मान ली। प्रिंसिपल ने भी अपनी चतुराई का परिचय देते हुए देहलवी जी को ऐसा विषय दिया जिससे वे अपना पाण्डित्य दिखाकर श्रोताओं का मन न जीत सकें। विषय दिया- '**भारत का विदेशों से व्यापार कैसे बढ़े?**' मरता क्या न करता पाण्डे जी ने उसकी यह शर्त भी मान ली।

देहलवी जी को विषय दिया तो उन्होंने सहर्ष इस पर बोलने की स्वीकृति दी। उनके नाम की सारे प्रयाग में धूम थी। मुट्ठीगंज का बच्चा-बच्चा उन्हें जानता था। आपने व्यापार, व्यवहार के नियम बताते हुए भारत के आयात-निर्यात की चर्चा छेड़ दी। कहा, व्यापार तो सत्य से बढ़ता है। हमारे निर्यात को तो झूठ ने डूबोया है। एक उदाहरण दिया कि एक कम्पनी ने विदेश से प्राप्त एक ऑर्डर पर माल भेजा। दिखाया था कुछ और भेजा कुछ। इस धोखाधड़ी से उस कम्पनी की क्या, भारत और भारतीय व्यापारियों की साख गिर गई। नकली माल भेजकर देश की नाक कटवा दी। फिर कहा, 'किया क्या जावे, यहाँ तो लोग नकली भगवान् बना लेते हैं। नकली भक्त, नकली पूजा। सत्कर्म से कुछ लेना-देना है ही नहीं। पाप क्षमा करने वाले तो-व्यापार क्या बढ़े?'

करतल ध्वनि से श्रोताओं ने पण्डित जी के विचारों का स्वागत किया। प्रिंसिपल देखता ही रह गया कि यह क्या हो गया। पण्डित जी क्या कह गये। उसने अनुभव किया कि उसका दाव तो बहुत उल्टा पड़ गया। मौलिक ऊहा तथा गहन चिन्तन वाले आर्य विद्वान् ने बड़ी सूझबूझ से वैदिक धर्म का डंका बजा कर दिखा दिया।

उत्तर देना सीखें:- कुछ व्यक्ति बहुत कुछ जानते हैं परन्तु अपने ज्ञान से लाभान्वित करने की योग्यता उनमें नहीं होती। आप यह भी कह सकते हैं कि समझाना-सिखाना भी एक कला है, विद्या है। इसके लिये प्रशिक्षण व अभ्यास चाहिये। कारागार में हमारे साथ कानपुर की ओर के एक वृद्ध संन्यासी थे। वह कभी प्राथमिक शाला के लोकप्रिय अध्यापक थे। जब वह व्याख्यान प्रवचन देते थे तो उनकी शैली हृदय स्पर्शी होती थी। उपाधि प्राप्त तो थे नहीं परन्तु अनेक उपाधि धारियों से वैदिक सिद्धान्तों के बढ़िया व्याख्याकार थे।

वैदिक धर्म पर अब पहले से भी कहीं अधिक विषैले तथा आपत्तिजनक लेख छपते रहते हैं। उत्तर देने वाले उंगलियों पर गिने जा सकते हैं और जो अपने को बहुत असाधारण विद्वान् घोषित व प्रचारित करते हैं वे उत्तर देने से बचते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो उत्तर देने का साहस तो कभी-कभी करते हैं परन्तु उत्तर देने की विद्या व प्रशिक्षण प्राप्त न करने के कारण बात कुछ बन नहीं पाती।

आर्य धर्म की रक्षा व प्रचार की जिन में लगन व तड़प है उन्हें अपने पूर्वजों की प्रश्नोत्तर कला का गम्भीर अध्ययन करके स्वयं को इस कला में सुदक्ष बनाना होगा। पं. लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी की ऊहा तथा उत्तर देने की कला बेजोड़ थी। इस परम्परा के अनेक विद्वानों को आर्य जनता जानती है। सबकी कला पर लिखना आज सम्भव नहीं परन्तु लेखक का यह मत है कि श्रद्धेय लक्ष्मण जी, पं. चमूपति जी और पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी भी उत्तर देने की कला के अद्वितीय आचार्य थे। पूज्य पं. रामचन्द्र देहलवी को वाणी द्वारा उत्तर देने में सिद्धि प्राप्त थी।

उत्तर देने वालों को केवल पढ़ना ही नहीं, चिन्तन, मनन और सोच विचार भी आवश्यक है। सोचकर विचार कर यदि हम उत्तर देंगे तो भूल से बचेंगे। हमारे उत्तर की प्रामाणिकता में बल होगा। श्री पं. रामचन्द्र जी आर्य ने चलभाष पर ऋषि जीवन पर एक प्रश्न का उत्तर माँगा। उत्तर दिया जा सकता था परन्तु इस विनीत ने कहा, प्रश्नकर्त्ता, आप जैसा विद्वान् हो तो सोचकर, देखकर उत्तर देना चाहिये अन्यथा भूल भ्रम आगे प्रसारित हो सकता है। उत्तर तभी दिया परन्तु कहा एक बार देख लेने दीजिये। देखा कि उत्तर ठीक ही दिया था।

आचार्य उदयवीर जी से साक्षात्कार लेते हुए महाविद्यालय में घटी एक घटना के बारे में पूछा तो आपने उसकी पुष्टि कर दी। तभी कुछ और प्रश्न पूछे। उन्होंने

उत्तर देते हुए कुछ घटनायें सुनाईं और कहा तब मैं सातवीं में पढ़ता था। हमने पहली घटना को भी उसी काल का समझकर पुस्तकों व लेखों में दे दिया। अब पता चला कि यह हमारे समझने की भूल थी। आचार्य जी की आत्म कथा से पता चला कि पहली घटना उन्होंने अपने मित्रों से सुनी थी। वे मित्र उसके प्रत्यक्षदर्शी थे।

आगे बढ़ना व कुछ बनना है तो हमारे युवकों को भूल के स्वीकार करने में संकोच नहीं होना चाहिये तथा उत्तर देते समय सोच-विचार कर जाँच-परख कर उत्तर देना चाहिये।

पं. चमूपति जी के तीन उत्तर:- उत्तर देने की पं. चमूपति जी की लेखन शैली अनूठी थी। उसके तीन उदाहरण यहाँ देते हैं:-

१. बहिश्त में जब जन्नती जायेंगे तो खाने-पीने के सामान तो वहाँ बहुत होंगे। ऋषि ने समीक्षा में लिखा मल-मूत्र विसर्जन से गन्दगी होगी तो इसे कौन दूर करेगा?

मौलाना सनाउल्ला जी ने पलट कर वार किया कि यह काम काफ़िरों से लिया जावेगा।

पं. चमूपति जी ने लिखा चलो। इसी बहाने वे भी बहिश्त में पहुँच जावेंगे परन्तु क्या दोज़ख भी उनके साथ ही वहाँ जावेगा? पण्डित जी ने जो प्रश्न पूछे वे आज भी अनुत्तरित हैं।

२. चमत्कारों के बारे में पण्डित जी ने लिखा है कि चमत्कार वास्तव में प्रभु की सत्ता व सामर्थ्य को स्वीकार करना नहीं- इनकार है। प्रभु अनादि है। नित्य है तो उसकी सत्ता व सामर्थ्य भी अनादि हैं और नित्य हैं। उसका ज्ञान पूर्ण है। उसके ज्ञान का मूर्तस्वरूप उसके नित्य अनादि नियम हैं। जहाँ उसके नियम टूटें, समझ लो कि परमात्मा के ज्ञान का निषेध हो गया। परमात्मा के ज्ञान व कर्म में परिवर्तन असम्भव है।

पाठकवृन्द! जो कुछ पण्डित जी ने लिखा है। इस्लामी विचारकों ने शब्दश: स्वीकार कर लिया है।

हम केवल तीन के नाम दिये देते हैं- सर सैयद अहमद ख़ाँ, मौलाना न्याज़ फतहपुरी, डॉ. गुलाम जेलानी आदि।

३. एक मौलाना ने डंके की चोट से वार किया कि जीव व प्रकृति अनादि नहीं हो सकते। क्यों? कह देने वाला लेने वाले से पहले होना चाहिये। अत: जीव व प्रकृति परमात्मा ने उत्पन्न किये।

पं. चमूपति जी ने एक ही वाक्य से उसके अहंकार तथा कल्पना का भवन भूमि पर बिछा दिया। लिखा:- मौलाना जब लेने वाला नहीं होगा तो प्रभु देगा किसे? और जो देने को कुछ नहीं होगा तो वह देगा क्या? अत: तीनों अनादि हैं।

एक-एक दो-दो वाक्यों में पण्डित जी के गम्भीर उत्तर पढ़कर दर्शन में रुचि रखने वाले एक मुसलमान वकील ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से कहा, प्रकृति व जीव के अनादित्व का आर्य सिद्धान्त तो पं. चमूपति जी को पढ़कर मेरी समझ में आ गया। ऐसा सुन्दर और कोई नहीं लिख सका।

सोचकर प्रश्न पूछिये:- परोपकारी में पटियाला केस पर हमारा निवेदन पढ़कर आर्य जगत् के लेखक ने चलभाष पर हठपूर्वक कहा कि मैंने सरकारी रिकॉर्ड देखकर पटियाला के अभियुक्तों के नाम व संख्या दी थी। उसे कहा गया कि हमने पुराने पत्रों विशेष रूप से महात्मा मुंशीराम जी, आचार्य रामदेव जी के ग्रन्थ के आधार पर सब कुछ लिखा है। वह चलभाष पर अड़ गया। उस भाई से कहा, आमने-सामने आकर प्रमाण देख लें और उत्तर पा लें। परन्तु वह क्यों मानें? हमने कहा, महोदय हमने तो महाशय रौनक सिंह आदि अभियुक्तों के दर्शन किये हैं। उनका नाम तक आपने न दिया। उस कर्मवीर ने मेरे साथ सत्याग्रह में भाग लिया। आपने सर्वाधिक यातना झेलने वाले आर्यसमाज पटियाला के सेवक का नाम तक न दिया। वह नाम हमने ही खोज निकाला।

हम गली-गली, ग्राम-ग्राम, नगर-नगर खोज करते रहे। डॉ. धर्मवीर जी को साथ लेकर वर्षा में, कीचड़ में तलवण्डी साबो के तीन अभियुक्तों के वंशजों की खोज करने भटकते रहे। शंका करो, प्रश्न करो और समाधान पाओ परन्तु चलभाष पर विवाद करने से पहले अपने आपसे यह तो पूछ लो कि आपके पास रिकॉर्ड है कितना? हम तो आप ही के सेवक हैं। जब से होश सम्भाला है आपकी सबकी आज्ञा से ऋषि मिशन की रक्षा में लगे हैं। मित्रवर! आपने उस काल के किसी पत्र का एक-आध अंक क्या देखा है? हमने पाण्डुलिपियों को भी पढ़ा है।

शेष भाग अगले अंक में.....

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को निरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४**

सोमरस नशीला पेय नहीं

-महात्मा चैतन्यमुनि

सोम के रहस्यों से अनभिज्ञ लोगों द्वारा बहुत जोर-शोर से प्रचारित किया जाता है कि सोमरस शराब जैसा कोई नशीला पदार्थ हुआ करता था, जिसे इन्द्र देवता तथा वैदिक ऋषि पीया करते थे। यदि हम सोम को सही-सही परिप्रेक्ष्य में देखें व समझें तो इस प्रकार की कल्पनाएँ एकदम निराधार हो जाती हैं। यदि हम सोम को पीने या खाने की बात भी करें तो सुश्रुत के अनुसार उसे कूट-छानकर उससे रस निकाला जाता है। फिर उसे दूध, दही तथा मधु आदि के साथ सेवन करना बताया गया है। विधिवत् इसके निर्माण की विधि बताई गई है तथा यज्ञ में सोम को आहुत करने की बात भी कही गई है। श्रेष्ठतमम् कर्म यज्ञ में इस प्रकार के नशीले पदार्थों को आहुत करने की कल्पना ही अनर्गल एवं निन्दनीय है। वेद में कहीं पर भी इस प्रकार के मद्य आदि नशीले पदार्थों का सेवन करने की बात नहीं कही गई है, बल्कि वेद में मद्य का निषेध किया गया है-

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्।
ऊधर्न नग्ना जरन्ते।।

(ऋ. ८-२-१२)

शराब को पीने वाले दुष्ट लोग आपस में लड़ते-झगड़ते हैं और नंगे होकर व्यर्थ बड़बड़ाते हैं, इसलिए मद्यपान बुरा है। अथर्ववेद (२०-११४-२) में भी कहा गया है कि सुरा पीने वाले लोग विनष्ट हो जाते हैं। ऐसा ही सामवेद (६-२-४) उत्तरार्चिक में भी कहा गया है।

सोम तो हमें पुण्यात्मा बनाता है, जबकि शराब को समस्त पापों की जननी कहा गया है। मदिरा, शराब या अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन से न केवल बुद्धि का विनाश होता है, बल्कि नशा करने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी रोग-निरोधक क्षमता भी समाप्त कर बैठता है तथा अनेक प्रकार के भयंकर रोगों से ग्रसित हो जाता है। नशा व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है। शराब आदि पीने से व्यक्ति अधिक कामी, अधिक क्रोधी, अधिक अहंकारी तथा अधिक लोभी और अधिक मोही हो जाता है। कितने ही दुराचार तथा अनाचार इसी नशे के कारण होते हैं क्योंकि नशे की हालत में व्यक्ति विवेकहीन होकर रुद्र-रूप धारण कर लेता है। इसलिए शतपथ (१२-७-३-२०) में कहा गया है- **सुराम्पीत्वा रौद्रमनाः भवति**

अर्थात् शराब पीकर मनुष्य का मन रौद्र हो जाता है। दूध अथवा सोम पीकर रौद्र मन का होना कहीं नहीं कहा गया। बल्कि सोम को रुद्र का विरोधी कहा है- **प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम।** (ऋ. ७-४१-१) ऋग्वेद में ही अन्यत्र कहा गया है कि शराब में व्यक्ति दुष्ट मद को प्राप्त होता है-

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्..... इसके विपरीत सोम को तो वेद में उत्तम रस कहा गया है। सोम एक औषधि ही नहीं है बल्कि वह औषधियों का राजा है। वेद में इसे आल्हादित करने वाला कहा गया है। रक्षित किए हुए सोमकण हमारे जीवनों को अलंकृत करते हैं। सोम रक्षण से प्राण-अपान की शक्ति बढ़ती है। सोम से व्यक्ति दीप्त मस्तिष्क, विशाल हृदय व दृढ़ांगों वाला बनता है तथा उसके भीतर शक्तियों का विस्तार होता है। इससे ज्ञान-दीप्ति प्राप्त होती है, जिससे मनुष्य परमात्मा की ओर झुकाव वाला बनता है। सोमरक्षण से दीर्घायु प्राप्त होती है। ज्ञान, बल तथा अप्रमत्तता प्राप्त होती है। सोमरक्षण सब सुखों का मूल है, यह हमें शक्तिशाली व प्रज्ञावान् बनाता है, उल्लसित करता है, ज्ञानदीप्त करता है, इससे सर्वांगीण उन्नति होती है। सोम-रक्षण से इन्द्रियाँ वश में होती हैं, वासना का क्षय होकर हमारी शारीरिक उन्नति होती है। प्रज्ञान व शक्ति प्राप्त होती है तथा वासना का विनाश होता है। इससे शरीर सबल तथा मस्तिष्क दीप्त होता है और जीवन में आनन्द प्राप्त होता है। इससे शान्त-वृत्ति एवं शान्त-स्वभाव वाले बनते हैं। जीवन सुन्दर, पवित्र और प्रशस्त बनता है। ज्ञान का परिपाक होता है, ईश्वर-प्रणिधान की पूर्ति होती है, प्रभु-स्तवन चलता है, वेद-ज्ञान उत्पन्न होता है और स्तुत्यवचनों का उच्चारण व दिव्यगुणों की प्राप्ति होती है। सोम ही उत्कृष्ट धन है, यह ज्ञानज्योति जलाने वाला तथा मन को उल्लसित करने वाला है। यह शक्तिशाली बनाता है तथा वासना का विनाश करता है।

सोम को स्वादु, वाणी में माधुर्य लाने वाला, उल्लास देने वाला तथा कान्ति एवं बुद्धि आदि देने वाला कहा है। इससे हमें बल तथा स्फूर्तियुक्त शक्ति प्राप्त होती है। यह हमारी बुद्धि को तीव्र करता है। सोम से दिव्यगुणों का वर्धन होता है, शक्ति और निरोगता प्राप्त होती है। सोम ज्ञान का वर्धन करता है। सोमरस दिव्य जन पीते हैं। इससे उनकी कर्तृत्व शक्ति बढ़ती है और वे उत्तम कार्य यशस्वी रीति से करने में समर्थ होते हैं। इससे कार्य करने के समय मन सुप्रसन्न रहता है और कार्य उत्तम प्रकार से होता है तथा व्यक्ति यशस्वी बनता है। इसी से व्यक्ति ज्ञान के द्वारा उत्कृष्ट जीवन वाला बनता है। यह व्यक्ति को ज्योति-सुख

व सौभाग्य सम्पन्न करता है। शत्रुओं का नाश करता है। बल व ज्ञान को बढ़ाकर हमारे इन्द्रियाँ, मन व बुद्धिरूप आयुधों को उत्तम बनाता है। सोमरस, बल और प्रज्ञानमय कर्म करने की शक्ति देने वाला होता है। यह दिव्यगुणों को बढ़ाता है तथा नीरोग बनाता है। यह सोम पवित्र करके प्रभु को प्राप्त कराने वाला है। सोमरस का प्रयोग यज्ञ में किया जाता है।

क्या नशीली वस्तुएं इस प्रकार की गुणवता से परिपूर्ण हो सकती हैं? तो फिर सोम को शराब जैसी नशीली वस्तु कैसे कहा जा सकता है? यजुर्वेद में निम्नलिखित मन्त्र (१९-७) आया है जिसमें सोम और सुरा के भेद को भली प्रकार से स्पष्ट किया है-

नाना हि वां देवहितꣳसदस्कृतं
मा सꣳसृक्षाथां परमे व्योमन्।
सुरा त्वमसि शुष्मिणी सोमऽएष
मा मा हिꣳसीः स्वां योनिमाविशन्ती।।

अर्थ- हे सोम और सुरा! देव ने तुम दोनों के लिए इस समस्त लोक में पृथक्-पृथक् स्थान निश्चित कर रखा है। तुम कहीं भी परस्पर एकत्र मत होओ (मा संसृक्षाताम्)। अर्थात्- तुम्हारे अन्दर कोई संसर्ग नहीं होना चाहिए। हे सुरा! तुम शोषण करने वाली (शुष्मिणी)हो, किन्तु यह सोम तुमसे सर्वथा भिन्न आर्द्र शान्तिप्रद है।

वाजसनेयि माध्यन्दिन याजुष् शतपथ ब्राह्मण में भी स्पष्टतः सोम और सुरा में पृथक्ता बताई गई है- **क्षत्रम्वै पयोग्रहाः विट्ससुराग्रहाः।** (शत.१२-७-३)अर्थात् दूध भरा पात्र क्षत्रिय है और सुरा प्याले साधारण प्रजा है। यहाँ पयोग्रह और सुराग्रह दोनों परस्पर विरोधी तत्व हैं, इसको आगे और स्पष्ट किया गया है-

(१) पयोग्रह प्राण हैं- सुराग्रह शरीर है।
(२) पयोग्रह सोम है- सुराग्रह अन्न है।
(३) पयोग्रह ग्राम्य पशु है- सुराग्रह वन्य पशु है।

इन दोनों का पार्थक्य शतपथ में इस प्रकार भी बताया गया है-

प्रजापतेर्वा एत अन्धसी।
यतसोमश्चसुरा च।
ततः सत्यं यशः श्रीर्ज्योतिः
सोमो अनृतं पाप्मा तमः सुरा।
(शत.५-१-२-१०)

अर्थात् प्रजापति-ईश्वर ने दोनों अन्नों या पदार्थों अथवा प्रजाओं को रचा जो कि सोम और सुरा हैं। उनमें से 'सोम' सत्य, यश, श्री और ज्योति का प्रतीक है तथा 'सुरा' अनृत (झूठ), पाप और अन्धकार का प्रतीक है। महामना पतंजलि ने ब्राह्मण वध और सुरापान को महान् दोषपूर्ण कहा है-

ब्राह्मणवधे सुरापाने च महान् दोष उक्तः।
(६-१-८४ भाष्य)

भाष्यकार कहते हैं कि जो व्यक्ति अनजाने में भी ब्राह्मण को मारता है या सुरा पीता है वह भी पतित हो जाता है।

यो ह्यजानन् वै ब्राह्मणं हन्यात् सुरां
वा पिबेत् सोऽपि मन्ये पतितः स्यात्।
(आह्निक-१)

ऋग्वेद में यह कहा गया है- **युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्।** (ऋ.८-२-१२) अर्थात् शराब पीकर लोग दुर्मद होकर आपस में लड़ते हैं। यह दुर्मद शब्द सोम अथवा दूध के लिए सारे वैदिक वाङ्मय में कहीं नहीं आया। वास्तविकता यह भी है कि कहीं पर भी 'सोम' शब्द सुरा के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है और न ही 'सुरा' शब्द ही सोम के अर्थ में कहीं प्रयुक्त हुआ है।

सोम को शराब या नशीली वस्तु समझ लेने के पीछे भी मूलतः यही भूल हुई है कि वेद पर कलम चलाने वालों ने न तो यास्काचार्य के आदेश का ही पालन किया और न ही पूर्व प्रसंग या मन्त्र के देवता को ध्यान में रखा। कुछ शब्दों को देखकर ही वे लोग भ्रमित हो गए लगते हैं। सोम के सम्बन्ध में अनेक स्थानों पर इस प्रकार के शब्द आए हैं, जैसे-मदिष्ठ, ममाद, मद, मदिरा, मदे सोमस्य, मदिर, मन्दितमः, मदेम, मदाय, मोदाय, मदिष्ठया, मदच्युत्, मृदेषु, मदन्तु, मदास तथा सुरासोमान या सुरासाम् आदि। वैदिक विद्वानों ने इनके जो अर्थ किए हैं, वे इस प्रकार हैं- मदिष्ठया (ऋ.९-१-१) अर्थात् उल्लास। ममाद (ऋ. ६-४७-२) अर्थात् बल, पराक्रम, उल्लास तथा कान्ति और बुद्धि देने वाला। मदः (ऋ.२-१५-२ से ९, ऋ.९-१०८-१, ९-६३-१६, सामवेद ६९२) अर्थात् हर्ष बढ़ाने वाला। मदिरा (ऋ. ९-९७-१४,१५) अर्थात् उल्लास का जनक एवं उल्लास तथा आनन्दित करने वाला। मदे सोमस्य (ऋ.८-३२-१, अथर्व ०८-३२-१, सामवेद १६४३) अर्थात् सोमरक्षण द्वारा प्राप्त उल्लास और उत्साह। मदिर (ऋ. ९-९७-१५, सामवेद ८०८) अर्थात् आनन्द देने वाला। मन्दितमः (ऋ. ९-१०८-१५, ९-७४-९) अर्थात् अत्यन्त आनन्द देने वाला तथा चार प्रकार के आनन्दों को देने वाला। मोदाय (यजु०२२-६) अर्थात् आनन्द प्राप्ति। मदिष्ठया (ऋ. ९-१-१) अर्थात् हमें आनन्दित करने वाला। मदच्युत (ऋ. ९-१२-३, सामवेद ४७७) अर्थात् जीवन में आनन्द को क्षरित करने वाला तथा उत्साह देने वाला।। मृदेषु (ऋ. ९-१९-७) अर्थात् उल्लसित। मदासः (ऋ. ९-६९-७) अर्थात् आनन्द देने वाला। मदन्तु (सामवेद ३९८) अर्थात् हर्षित करने वाला। सुरासोमान या सुरासोम् (यजु. २१-५८,५९) आत्मशासन व आत्मनियन्त्रण कराने वाला तथा उत्तम रस।

- महादेव, सुन्दर नगर-१७४४०१, हि.प्र.

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (द्वितीय स्तर)

दिनांक १५ से २२ जून २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आंकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे। इस दिशा में अब तक दो शिविरों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर सफल प्रयास किया गया है। **इस द्वितीय स्तर के शिविर में वे ही भाग ले सकेंगे, जिन्होंने प्राथमिक स्तर वाले शिविर में भाग लिया है।** इस शिविर में प्राथमिक स्तर वाले शिविर की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मता से विषयों का अनुभव करवाया जाएगा और वैसा ही सूक्ष्मता से, कठोरता से नियम व अनुशासन होगा।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. दिनचर्या के कुछ भाग में आकृति मौन भी अनिवार्य होगा।
३. प्रार्थी की न्यूनतम दसवीं के स्तर की योग्यता अनिवार्य है। इस हेतु प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि लाना आवश्यक है।
४. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
५. शारीरिक व मानसिक सात्विकता के लिए यथासम्भव भोजन की मात्रा निश्चित होगी।
६. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
७. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
८. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
९. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
१०. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
११. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
१२. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१३. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
१४. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से

पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १६ से २३ मई, २०१४ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

२. २४ से ३१ मई, २०१४ **संस्कृत सम्भाषण शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४७०९४९४

३. १ से ८ जून, २०१४ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

४. १५ से २२ जून, २०१४- **योग-साधना शिविर (द्वितीय स्तर),** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

विशेष- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित पूर्व दो ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविरों में प्रथम व उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त प्रशिक्षकों के लिए भी योग साधना शिविर (द्वितीय स्तर) में भाग लेने का अवसर रहेगा।

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

कौन हैं हम भारतवासी?

– ज्ञानेन्द्र मिश्र

पिछले अंक का शेष भाग.....

कुल मिलाकर कुछ निष्कर्षों को लगभग प्रमाणिक माना जा रहा है। यह तय है कि भारत में आधुनिक मानव ७४००० वर्ष पूर्व आ गये थे जबकि ऑस्ट्रेलिया में ४५००० वर्ष पूर्व तथा यूरोप में ४०००० वर्ष पूर्व। अर्थात् भारत में यूरोप से कम से कम ३४००० वर्ष पूर्व आधुनिक मानव के कदम पड़ चुके थे। दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि भारत में प्रवेश का एक मात्र द्वार उत्तरी पश्चिमी गलियारा नहीं था अपितु इससे कई हजार वर्ष पूर्व समुद्र के किनारे-किनारे भारतीय भू-भाग पर आधुनिक मानवों का प्रवेश हो चुका था अर्थात् इसकी भी सम्भावनाएँ बनती हैं कि सभ्यता की दिशा उत्तर पश्चिमी से दक्षिण के साथ-साथ दक्षिण से उत्तर पश्चिम की ओर भी हो सकती है। जून २००७ की प्रसिद्ध वैज्ञानिक पत्रिका साइंस में माइकल बाल्टर ने जब कृषि के विकास एवं जंगली प्रजातियों से कृषि योग्य उपजाऊ प्रजातियों के बारे में चर्चा की है तो उसमें दक्षिण भारत का नाम आया है जहाँ ४५०० वर्ष पूर्व चने, मूंग एवं अन्य अनाजों के कृषिकरण के प्रमाण मिले हैं। दक्षिण भारत विश्व में ऐसे क्षेत्रों में आता है जहाँ कृषि योग्य प्रजातियों का स्वतन्त्र रूप से विकास हुआ था। भारतीय वैज्ञानिकों का मानना है कि भारत भूमि मानव सभ्यता के विकास क्रम का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा होगा। पर इन रहस्यों भरी प्राचीन पुस्तकों के पन्नों से धूल झाड़ने के लिए अभी और अध्ययनों एवं शोध की आवश्यकता है।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोलॉजीकल के निदेशक विजयेन्द्र कश्यप एवं साथी वैज्ञानिकों का अध्ययन पिछले १०००० वर्षों में भारत में उत्तरी पश्चिमी गलियारे से किसी बहुत बड़े समूह के आगमन का, जिसके कारण भारतीय भाषा सभ्यता एवं संस्कृति की वर्तमान स्थिति है, समर्थन नहीं करता। उनके अनुसंधान सहयोगी स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के पीटर अन्डर हिल का मानना है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि आर्य भाषी लोग भारत में आये पर भारतवासियों के जीन में अर्थात् माता या पिता के रूप में उनका योगदान बहुत कम रहा है। स्पष्टत: लोग भारत में आये, भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा में योगदान दिया पर यहाँ के लोगों में समाहित हो गये । किन्तु उनका माँ एंव पिता के रूप में योगदान बहुत कम रहा है।

भारत में आर्य भाषी एवं दक्षिण भाषा दोनों में Cx, LI, HI,की R2 हैप्लोग्रुप पाया जाता है जबकि इनकी भारत के बाहर उपस्थिति नगण्य है। इनके ठीक विपरीत EI, G, J,एंव R1हैप्लोग्रुप लगभग ५३ प्रतिशत तुर्कों में तथा २४ प्रतिशत मध्य एशिया में पाये जाते हैं।

यदि भारत में लोग मध्य एशिया या तुर्की के आस-पास से आये होते तो भारत में पाये जाने वाले जीन समूह इन जनसंख्याओं में बहुतायत एवं तुलनात्मक रूप से अधिक प्राचीन होते। परन्तु कश्यप एवं साथियों का शोध यह दर्शाता है कि स्थिति इसके ठीक विपरीत है। भारतीय समुदाय में पाये जाने वाले जीन समूह अधिक प्राचीन हैं तथा भारत से बाहर इनकी मात्रा बहुत कम है। दूसरे यदि आर्यों के आगमन के तथाकथित जीन समूह रीत J2 R1â,R एंव L वास्तव में इनके प्रतीक होते तो आज भी ये आदिवासियों में नहीं पाये जाते। कुल मिलाकर ये निष्कर्ष भारत में पिछले १०००० वर्षों से किसी बड़े समूह के आगमन का प्रतिकार करते हैं। सिर्फ आनुवंशिक रूप से आग्नेय भाषायी परिवार के लोग भारत में पूर्वी एशिया से आये लगते हैं इनका आगमन पिछले १०००० वर्षों के भीतर का हो सकता है।

परन्तु स्थिति की सही पहचान के लिये कुछ और तथ्यों पर दृष्टि डालनी होगी। भारत में मुस्लिम आक्रमण एवं शासन के विगत ८०० वर्षों का इतिहास रहा है। १० वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही भारत में मुसलमान आक्रमणकारियों का आगमन शुरू हो गया था। भारत में मुस्लिम धर्मावलम्बी, हिन्दुओं के बाद सबसे बड़े धार्मिक समुदाय हैं। पर क्या भारत में मुस्लिम समुदाय एक सांस्कृतिक तथ्य है या इसका कोई आनुवंशिक प्रभाव है। इसे जानने के लिये अमेरीका एवं भारतीय वैज्ञानिकों के एक दल ने आन्ध्र प्रदेश, श्रीलंका,पाकिस्तान,ईरान, तुर्की, मिश्र, मोरक्को तथा अन्य लोगों से की। इन्होंने पाया की आन्ध्र प्रदेश के मुसलमान भारत के ही अन्य मुसलमानों की तुलना में आन्ध्रप्रदेश के गैर मुस्लिम समुदाय से आनुवंशिक रूप में अधिक निकट है। अर्थात् धर्म का जीन से कोई रिश्ता नहीं है। यह पाया गया कि भारत में मुस्लिम सभ्यता से हिन्दू पैतृक प्रभाव समाप्त नहीं हो सका है तथा मुस्लिम समुदाय मूलत: धर्म से अलग है न कि

जीन से। जबकि चीन एवं मध्य एशिया में ऐसी स्थिति नहीं है वहाँ मुस्लिम समुदाय जीन से भी अलग है।

२००९ में नेचर में प्रकाशित अपने ऐतिहासिक शोध पत्र में भारतीय जनसंख्या के बारे में डी. रीच, कुमारस्वामी थंगराज, लालजी सिंह एवं साथी वैज्ञानिकों ने पाया था कि वर्तमान भारतीय जनसंख्या मूलत: उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय पूर्वजों के जीन पूल का मिश्रण है। मूल दक्षिण भारतीय पूर्वजों के निशान अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की कुछ आदिवासी प्रजाति में ही शेष हैं। मुख्य भू-भाग पर बसने वाले सभी लोग चाहे वो जाति समूह के हों, आदिवासी हों या फिर अभी भी अति प्राचीन जीवन शैली में रहने वाले आदिवासी हों, सभी उत्तर भारतीय पूर्वजों एवं दक्षिण भारतीय पूर्वजों की मिश्रित संताने ही हैं।

जर्नल ऑफ बायोसाइंस में २०१२ के अपने शोध पत्र में लालजी सिंह एवं साथी वैज्ञानिकों ने स्पष्ट रूप से भारत में आर्यों के आगमन की संभावना को नकार दिया है। अपने शोध के निष्कर्ष के आधार पर उन्होंने पाया कि भारतीयों में, चाहे वो उत्तर भारतीय पूर्वजों की संतान हों या दिक्षण भारतीय पूर्वजों की, हैप्लोटाइप विभिन्नतायें पश्चिम यूरेशिया की जनसंख्या की तुलना में अधिक हों जो उनकी प्राचीनता की ओर संकेत करती हैं। इतना ही नहीं उनमें जो साझा जेनिक हेप्लोटाइप समूह हैं वो आर्यों के आगमन से बहुत पहले के हैं। इस तरह वो भारत के पूर्वजों की प्राचीनता का ही समर्थन करते हैं।

अमरीकन जर्नल ऑफ ह्यूमन जेनेटिक्स में २०१३ में प्रकाशित अपने एक शोध पत्र में लालजी सिंह एवं उनके साथी वैज्ञानिक अपने उस निष्कर्ष की चर्चा करते हैं जिसमें भारतीय सम्प्रदायों में पारस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध लगभग १९०० से ४२०० पूर्व बन्द हो गये थे। शायद यही समय था जब सम्प्रदायों में आन्तरिक विवाह प्रथा प्रारम्भ हो रही थी। लेकिन वो इस बात का स्पष्ट रूप से खंडन करते हैं कि १९०० से ४२०० की अवधि से पूर्व पश्चिमी यूरेशिया से किसी समुदाय का भारत में आगमन हुआ था। उनका मानना है कि अभी उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर १२५०० वर्ष से भारत में किसी यूरेशिया से जीन के आगमन की संभावना नगण्य है।

जर्नल ऑफ लैंग्वेज रिलेशनशिप में हालिया २०१३ में प्रकाशित अपने एक शोध पत्र में रूसी वैज्ञानिकों का कहना है कि R1â हेप्लोसमूह का भारतीय यूरोपीय भाषाओं के प्रसार के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जाए और उसकी उत्पत्ति के स्थान को अब तक सबसे विश्वसनीय वैज्ञानिक तरीके से देखा जाए तो उसकी उत्पत्ति का स्थान भारत प्रतीत होता है जो कि सामान्य धारणा, यूरोपीय भाषाओं का प्रसार पश्चिम से पूर्व की ओर हुआ, के विपरीत है।

भाषा एवं जीन के आपसी सम्बन्धों की चर्चा करते हुए वैज्ञानिक लगभग चार प्रकार के प्रसार की बात करते हैं। प्रथम, डेमिक प्रसार जिसमें भाषायी समुदाय नये जनसंख्या में प्रवेश करता है तथा वहाँ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करता है। कृषि के प्रसार के साथ भाषा के प्रसार इसके उदाहरण हैं। दूसरे प्रकार को सांस्कृतिक प्रसार कह सकते हैं जिसमें आपसी सम्पर्क से सांस्कृतिक ज्ञान का आदान-प्रदान तो होता है पर वैवाहिक सम्बन्ध न होने से जेनेटिक आदान-प्रदान नहीं होता। वैज्ञानिक कृषि की तकनीक के उस प्रसार का उल्लेख करते हैं जिसमें तकनीक का प्रसार तो हुआ पर उसमें उन किसानों का कोई वास्तविक प्रयाण नहीं हुआ। पहले और दूसरे प्रसार की विधियों के सम्मिश्रण से तीसरे प्रकार का जन्म हुआ। अधिकांश यूरोपीय समुदाय इसके उदाहरण हैं। यह भाषा-भाषी समुदाय वास्तव में दूसरे समुदाय में चला गया और उसके कारण भाषा का प्रसार हुआ पर वे लोग स्थानीय समुदाय में ही घुल मिल गये और उनका स्वतन्त्र अस्तित्व समाप्त हो गया। चौथा एवं सबसे महत्त्वपूर्ण है बुद्धिजीवियों द्वारा भाषा का प्रसार। भाषाओं के विस्तार को यदि ध्यानपूर्वक देखें तो सम्बन्धित भाषाओं वाले समुदायों में आनुवंशिक सम्बन्धों का स्पष्ट अभाव दिखता है, उदाहरण के लिये यूरोपीय भाषाओं के दो ध्रुव पश्चिमी यूरोप एवं भारत में, स्पष्ट आनुवंशिक सम्बन्ध नहीं है परन्तु हिन्दी भाषी एवं द्रविड़ भाषी समुदाय जेनेटिक रूप से निकट सम्बन्धी है। वैज्ञानिकों का मानना है कि 'बुद्धिजीवियों द्वारा भाषा का प्रसार' ही इस तरह के भाषा के प्रसार की व्याख्या कर सकता है।

यदि वर्तमान भारत में अंग्रेजी भाषा का प्रसार देखें तो इसका आभास होता है। भारत में मुट्ठी भर अंग्रेज व्यापारी आये,२०० वर्षों तक रहे और चले गये। भारत के जीन पूल में उनका योगदान नगण्य है। पर उनकी भाषा, आधुनिक तकनीकी एवं विज्ञान की भाषा होने के कारण, पूरे भारत में पढ़ी, बोली एवं सीखी जाती है। आज भारत में उनके मूल देश ब्रिटेन में अंग्रेजी बोलने वाले साढ़े छ: करोड़ लोगों से दुगने साढ़े बारह करोड़ लोग अग्रेंजी भाषा बोलते हैं। भारत में हिन्दी के बाद अंग्रेजी सबसे ज्यादा बोली जाने

वाली भाषा है।

सांस्कृतिक एवं आनुवंशिक प्रमाणों के दृष्टिगत, वैज्ञानिकों के एक समूह का मत है कि तथाकथित आर्य एवं द्रविड़ एक ही सभ्यता एवं संस्कृति के अंग हैं। इस प्रकार उन्हें अलग-अलग सभ्यताओं के रूप में सम्बोधित करना युक्ति संगत नहीं है। भविष्य में और अनुसंधान की आवश्यकता पर जोर देते हुए डॉ. लालजी सिंह शाश्वत प्रश्न उठाते हैं कि क्या यूरेशियाई लोग प्राचीन उत्तर भारतीय लोगों की ही संतानें हैं?

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है कि भारतीय लोगों में भाषा, जाति, धर्म तथा स्थान, आदिवासी एवं अन्य लोगों में जेनेटिक रूप से कोई स्पष्ट विभाजन के प्रमाण नहीं मिल रहे हैं। लगभग यह तय है कि सभी भारतीय मौसेरे भाई-भाई हैं बस अंतर पीढ़ियों का है। भारतीय जनसंख्या प्राचीनतम आधुनिक मानव के भारतीय भू-भाग में आगमन के पश्चात् लगातार फल-फूल रही है। द्रविड़ भाषा, भारतीय समुदाय से ही उत्पन्न एवं विकसित हुई है। भारतीयों का विश्व के अन्य लोगों से सम्पर्क लगातार बना रहा है। बाहर से आने वाले अपनी भाषा एवं सभ्यता को लेकर भारतीय महासमुद्र में समाहित होते रहे हैं। पर पिछले १०००० वर्षों से बहुत बड़ा समूह जिसके स्पष्ट आनुवंशिक प्रमाण हों, भारत में नहीं आया। भारतवासी मूलत: भारतवासी ही हैं।

विज्ञान प्रगति से साभार

आई.बी./ 1 एन.पी.एल. कॉलोनी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली मो. ९८११७५३६२६

ईश्वर! ईश्वर! ईश्वर!

- महेन्द्रसिंह आर्य

पंछियों के कलरव में,
जंगलों के नीरव में,
कोयल की कुहुक में,
चिड़ियों की चहक में,
होता है एक स्वर-
ईश्वर! ईश्वर! ईश्वर!

वर्षा की टप-टप में,
मेंढ़क की टर-टर में,
बिजली की तड़पन में,
पत्तों की खड़कन में,
होता है एक स्वर-
ईश्वर! ईश्वर! ईश्वर!

नव-शिशु के रोने में,
चुप होके सोने में,
नन्हीं सी धड़कन में,
हल्की सी सिहरन में,
होता है एक स्वर-
ईश्वर! ईश्वर! ईश्वर!

- मुम्बई

आस्था भजन (चैनल) पर प्रवचन

स्वामी रामदेव जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने चैनल पर दो घण्टे का समय देकर वैदिक विद्वानों के प्रवचन की शृंखला प्रारम्भ की है। उसी क्रम में परोपकारिणी सभा द्वारा भी वैदिक विद्वानों के प्रवचन के प्रसारण की योजना बनाई गई। इस हेतु विगत ८-१० माह से ऋषि उद्यान परिसर में विडियो रिकॉर्डिंग का कार्य चल रहा है।

अब स्वामी रामदेव जी द्वारा इन प्रवचनों का 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ८ बजे तक प्रसारण प्रारम्भ कर दिया गया है। जिसके अन्तर्गत **७.०० से ७.२०** तक **डॉ. धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन तथा **७.३० से ७.५०** तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन विषयक प्रवचन सुने जा सकते हैं।

इस कार्य के लिए सभा और समस्त आर्यजगत् की ओर से स्वामी रामदेव जी का धन्यवाद करते हैं और आभार मानते हुए प्रभु से उनके इस सामर्थ्य और भावना को बनाये रखने की कामना करते हैं तथा उनके दीर्घायुष्य व उत्तम स्वास्थ्य की प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

सभी धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

व्यावहारिकता-कितनी सार्थक

- सुकामा आर्या

हम सब जीवन जीते हुए विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न स्तर के लोगों से व्यवहार करते हैं। हमारी शैक्षणिक योग्यता, हमारी भावनाएँ, हमारी संवेदनशीलता हमारे व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

सर्वप्रथम हम स्वयं को लें, मैं स्वयं से कैसा व्यवहार करता हूँ? मेरा अपना स्वयं के प्रति क्या दृष्टिकोण है? मैं अपनी अनुभूतियों के प्रति, अपनी प्रतिक्रियाओं के प्रति कितना संवेदनशील हूँ?

फिर हमारा व्यवहार हमारे आस-पास के व्यक्तियों के प्रति, परिवार के प्रति, कार्यकत्ताओं के प्रति किस प्रकार का है? किन-किन परिस्थितियों में मेरा स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रहता है? किस प्रकार दूसरों का व्यवहार मेरे मानसिक धरातल पर हलचल मचा देता है? कब-कब मेरा रिमोट कन्ट्रोल दूसरों के हाथ में अनचाहे चला जाता है? मैं अपनी स्वतन्त्रता, अपना नियन्त्रण खो देता हूँ? ऐसी विकट परिस्थितियों में मेरा व्यवहार का स्तर कितना नीचे गिर जाता है?

इस दायरे को विस्तृत करके देखें, मेरा ईश्वर के साथ व्यवहार कैसा है? मैं ईश्वर को जैसा वह है, जैसा वह चाहता है, जैसी उसकी मेरे से अपेक्षा है, क्या मै वैसा व्यवहार कर पाता हूँ? दुनिया के लोगों पर तो हम उँगुली उठा सकते हैं कि उसकी वजह से मेरा मन खराब हुआ पर यह दोष हम ईश्वर पर तो नहीं लगा सकते वह तो निर्विकार है। तो क्या उसके प्रति मेरा व्यवहार उच्चतम स्तर का है? या यहाँ भी अगर न्यूनता है तो वह शत-प्रतिशत मेरी है, मैं इसके लिए सौ प्रतिशत जिम्मेदार हूँ।

अपने अस्तित्त्व को पहले देखें। शान्त मौन होकर-श्वास को नियन्त्रित कर के मन के विचारों को देखें। एक दिन की, किसी विशेष घटना को सामने लाएँ और विचार करें, मैं अपने आप से कब-कब सामान्य स्तर का व्यवहार करता हूँ ? कब मेरा अपने से व्यवहार अपने सामान्य स्तर से नीचे गिर जाता है? कौन सी परिस्थिति मेरा आत्म विश्वास को डगमगाने में, संशय पैदा करने में कामयाब हो जाती है? कब-कब, किन-किन विषयों पर मेरी अपने ऊपर झुंझलाहट होती है? मेरे को समझ में ही नहीं आता है।

मेरी तो बुद्धि ऐसी ही है। मेरी तो योग्यता ही नहीं है? कब हम इन नकारात्मक विचारों को उठा लेते हैं हमें पता ही नहीं चलता है। क्षणभर में, एक सैकेण्ड में, कोई घटना हुई और हमारे विचारों की अधोगति शुरू हो जाती है। उस समय अपनी प्रतिक्रियाओं के साथ-साथ शारीरिक गतिविधियाँ भी देखें। क्या मैं बार-बार सिर खुजलाने लगता हूँ? नाखून दान्तों से काटने लगता हूँ? या बार-बार कुछ खाने को दौड़ता हूँ? ये मानसिक तनाव व शारीरिक क्रियाओं में अटूट सम्बन्ध है। मन का तनाव किसी न किसी बहाने प्रकट होता है। इसका हल यही है, सीधे श्वास पर ध्यान ले जाएँ, दीर्घ बाह्य श्वसन से तनाव को बाहर फेंक दें। अब गम्भीरता से देखें, क्या इन विचलन के क्षणों में मैं बिना उत्तेजित हुए, अपने विश्वास को बनाए रखते हुए क्या परिस्थितियों को सम्भाल सकता हूँ? प्रयास करें-कृत्रिम रूप से वैसी ही परिस्थिति अपने सामने उपस्थित करें और साहस से बिना प्रतिक्रया करे स्थिर रहें। धीरे-धीरे अभ्यास परिपक्व होने पर इसे व्यवहार काल में आसानी से उतारा जा सकता है।

आसपास के प्राणियों पर दृष्टिपात करें। मैं पशु-पक्षियों को किस दृष्टि से देखता हूँ? क्या मैं उनमें जीवन मानता हूँ? मानता हूँ तो क्या मैं उनकी जरूरतों, अपेक्षाओं के प्रति संवेदनशील हूँ? मेरा उनके प्रति व्यवहार कितनी आत्मीयता से युक्त है? अपना-अपना विश्लेषण करें। अगर आपको लगे आप किसी प्राणी के साथ अन्याय कर रहे हैं-हिंसक हो रहे हैं तो वहाँ अपने व्यवहार में संशोधन करें।

अपने परिजनों, अपने मित्रों पर, शिष्यों पर, कार्यकत्ताओं पर दृष्टिपात करें। किस व्यक्ति विशेष से मुझे खिन्नता है? किस के चहेरे को देखने पर मेरा मूढ़ खराब हो जाता है? उस का कारण क्या है? क्या उसका विशेष व्यवहार है या उसका व्यक्तित्व है? उस समय ये विचारें कि हर कोई अपने में स्वतन्त्र इकाई है-कौन व्यक्ति यहाँ हमेशा रहा है? सबका सब कुछ- रुतबा, विद्या, पैसा, व्यापार यही पर समाप्त होने वाला है।

गया राहे हयात से कौन सलामत,
असबाब लुटा राह में यहाँ हर सफरी का।

तो किस बात का द्वेष? इस क्षण मेरा व्यवहार मेरे

द्वारा नियन्त्रित होना चाहिए। मैं अपने आप का मालिक हूँ। मेरा रिमोट कन्ट्रोल मेरे स्वयं के हाथ में है।

इस प्रकार अपने व्यवहार को दूसरों के प्रति भी देखें। क्या मैं दूसरों की आवश्यकता पड़ने पर सहायता करता हूँ? क्या मैं उनके दु:ख में सहानुभूति रखता हूँ?

प्यासों की प्यास बुझा न सकें, वे उजले धन किस काम के हैं?
हों मुग्ध न मधुकर जिनपर वे, निर्गन्ध सुमन किस काम के हैं?
जिनमें न नेह का नीर भरा, वे निष्ठुर नयन किस काम के हैं?
सुनते न किसी की व्यथा कथा, वे बधिर श्रवण किस काम के हैं?

अपने मानव जीवन की सार्थकता इसी में है जब हम मानवीय गुणों को अपनाएँ। थोड़ा-सा सम्भल कर चलें देखे, त्रुटियाँ साफ व्यवहार काल में नजर आएंगी, बाद में अभ्यास से उनको प्रकट होने से रोका जा सकता है। प्रारम्भिक स्तर पर दूसरों से व्यवहार पक्ष की त्रुटियों को जाना जा सकता है- पर स्वयं का अनुभव स्वंय का स्वयं पर कार्य अधिक फलीभूत होता है।

इसी तरह जीवन की विफलताओं के लिए, संघर्ष के लिए, आपदाओं के लिए हम ईश्वर पर कितनी बार अनजाने में दोषारोपण कर देते हैं। मेरे साथ ही ऐसा क्यों? दूसरे मेरे से ज्यादा बुरे हैं पर वे अधिक सफल हैं? मेरे साथ ही ईश्वर आप अन्याय करते हो? खिन्नता के क्षणों में ये बातें अनायास ही निकल जाती हैं। पर सूक्ष्मता से देखें तो ये हमारा व्यवहार, ईश्वर के प्रति ठीक नहीं है, जो दाता है, रक्षक है-प्रियतम है-उसके प्रति हमारा व्यवहार भी यथायोग्य होना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में ही तो सन्तुलन का, व्यवहार का पता चलता है। साधारण परिवेश में तो हम सन्तुलित रहते ही हैं ।

सो अपने व्यवहार को प्रेम से, शान्ति से, संयम से, आत्मीयता से सन्तुलित रखें ताकि हमारा साधना का मार्ग प्रशस्त हो। हम पाप कर्मों से बचें, पुण्यों के खाते में राशि जमा करें जिससे जीवन की यात्रा के अन्तिम निर्धारित लक्ष्य तक पहुँच जाएँ। **ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

आवासिकं संस्कृत-भाषा-शिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम्

लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखाया: परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।

अवधि: - २४-०५-२०१४ त: ३१-०५-२०१४ (अष्ट दिनात्मकम्)
(२३-०५-२०१४ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)

स्थानम् - ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्ग:, अजमेर-३०५००१, दूरभाष:- ०१४५-२६२१२७०

योग्यता - संस्कृते रुचिमन्त: संस्कृत-आचार्या:, अध्यापका:, संस्कृतछात्रा:, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।

शुल्कम् - ३०० रुप्यकाणि।

व्यवस्था - एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
- बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिन: नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्री: च आनयेयु:।

स्वरूपम्- शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
- संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यास:,

विशेष - **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

डॉ. धर्मवीर:
अध्यक्ष:

डॉ. निरञ्जन साहु:
सचिव:
०९४१४७०९४९४, ९८२९१७६४६०

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ अप्रैल २०१४ तक)

१. श्रीमती उषा आर्या, अजमेर २. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ३. श्रीमती विमला गुलाटी, दिल्ली ४. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ५. श्री रामवीर चूघ, पंचकूला, हरियाणा ६. स्वास्तिकामाह: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र ७. श्री भास्कर सेन गुप्ता, बैंगलूर ८. श्री मुरलीधर भट्टड़, अजमेर ९. मुनि महेन्द्रसिंह आर्य, सहारनपुर, उ.प्र.।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ अप्रैल २०१४ तक)

१. श्रीमती उषा आर्या, अजमेर २. श्रीमती विमला गुलाटी, दिल्ली ३. श्रीमती शान्ति स्वरूप टिक्कवाल, जयपुर, राज. ४. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ५. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ६. श्री गोकुलचन्द भगत, जालन्धर, पंजाब ७. श्रीमती सुशीला भगत, जालन्धर, पंजाब।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

आर्यो! धर्म रक्षा-धर्म प्रचार के लिये अब आगे आओ।

परोपकारिणी सभा अपने सर्व सामर्थ्य से ऋषि मिशन की सेवा में जुटी है। आर्यधर्म पर वार करने वालों का उत्तर देने के लिए परोपकारिणी सभा हर घड़ी तैयार रहती है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पीठ की स्थापना करके सुयोग्य विद्वान् को अरबी उर्दू के विद्वान् तैयार करने के लिये नियुक्त कर दिया। अब सभा के पास पढ़ाने वाले हैं। लगनशील सुयोग्य युवक तथा सेवानिवृत्त अनुभवी आर्य विद्यार्थी यहाँ तीन-तीन मास, छ:-छ: मास तथा वर्ष-दो वर्ष रहकर अरबी आदि पढ़कर पं. धर्मभिक्षु जी, पं. रामचन्द्र देहलवी जी तथा पं. शान्तिप्रकाश जी के रिक्त स्थान की भरपाई करें। इस पुण्य कार्य में दानी तथा समाजें सभा को उदारता से दान देकर सहयोग करें।

नवीन प्रकाशन का परिचय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय के द्वारा प्रेरणास्पद व भक्त्योत्पादक **कैलेण्डरों** व **स्टीकरों** का नवीन प्रकाशन किया गया है।

कैलेण्डर - (क) महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ- इसमें महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित धार्मिक-व्यवहार से लेकर ईश्वर-भक्ति तक ले जाने वाले प्रेरक-वाक्यों का संग्रह किया गया है।

(ख) सन्ध्या सुरभि- इसमें महर्षि दयानन्द जी की भक्त्योपादक वाक्य-रचना का आधार लेकर वैदिक सन्ध्या के भावों को सुरभित किया गया है।

(ग) गायत्री मन्त्र- इसमें गायत्री मन्त्र के अनेक विशेष अर्थों के द्वारा ईश्वर के गुणों के प्रति प्रेरित किया गया है। साथ में मन्त्र का भाव कविता रस में भी बाँधा गया है।

स्टीकर- इसमें परमात्मा के मुख्य नाम **ओ३म्** व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र को विशेषत: प्रकाशित किया गया है।

सभी आर्यजनों को ये नवीन प्रकाशन अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

Sardar Placed China 18 Years Ago

पिछले अंक का शेष भाग.....

My Dear Jawaharlal,

Ever since my return from Ahmedabad and after the Cabinet meeting the same day which I had to attend at practically fifteen minutes' notice and for which I regret I was not able to read all the papers, I have been anxiously thinking over the problem of Tibet and I thought I should share with you what is passing through my mind.

I have carefully gone through the correspondence between the External Affairs Ministry and our Ambassador in Peking and through him the Chinese Government. I have tried to peruse this correspondence as favourably to our Ambassador and the Chinese Government as possible, but I regret to say that neither of them comes out well as a result of this study.

The Chinese Government have tried to delude us by professions of peaceful intentions. My own feeling is that at a crucial period they managed to instill into our Ambassador a false sense of confidence in their so-called desire to settle the Tibetan problem by peaceful means.

There can be no doubt that, during the period covered by this correspondence, the Chinese must have been concentrating for an onslaught on Tibet. The final action of the Chinese, in my judgment, is little short of perfidy.

The tragedy of it is that the Tibetans put faith in us; they chose to be guided by us; and we have been unable to get them out of the meshes of Chinese diplomacy or Chinese malevolence. From the latest position, it appears that we shall not be able to rescue the Dalai Lama.

Suspicion of India :- Our Ambassador has been at great pains to find an explanation or justification for Chinese policy and action. As the External Affairs Ministry remarked in one of their telegrams, there was a lack of firmness and unnecessary apology in one or two representation that he made to the Chinese Government on our behalf. It is impossible to imagine any sensible person believing in the so-called threat to China from Anglo-American machination in Tibet. Therefore, if the Chinese put faith, in this, they must have distrusted us so completely as to have taken us as tools or stooges of Anglo-American diplomacy or strategy. This feeling, if genuinely entertained by the Chinese in spite of your direct approaches to them, indicates that, even though we regard ourselves as the friends of China, the Chinese do not regard us as their friends. With the Communist mentality of "Whoever is not with them being against them", this is a significant pointer, of which we have to take due note.

Lone Champion :- During the last several months, outside the Russian camp, we have practically been alone in championing the cause of Chinese entry into the UNO and in securing from the Americans assurances on the question of Formosa. We have done everything we could to assuage Chinese feeling, to allay their apprehensions and to defend their legitimate claims, in our discussions and correspondence with America

and Britain and in the UNO. In spite of this, China is not convinced about our disinterestedness; it continues to regard us with suspicion and the whole psychology is one, at least outwardly, of scepticism perhaps mixed with a little hostility.

I doubt if we can go any further-than we have done already to convince China of our good intentions, friendliness and goodwill. In Peking we have an Ambassador who is eminently suitable for putting across the friendly point of view. Even he seems to have failed to convert the Chinese. Their last telegram to us is an act of gross discourtesy not only in the summary way it disposes of our protest against the entry of Chinese forces into Tibet but also in the wild insinuation that our attitude is determined by foreign influences.

It looks as though it is not a friend speaking in that language but a potential enemy.

In the background of this, we have to consider what new situation now faces us as a result of the disappearance to Tibet, as we know it and the expansion of China almost up to our gates. Throughout history, we have seldom been worried about our north-east frontier. The Himalayas have been regarded as an impenetrable barrier against any threat from the north. We had a friendly Tibet which gave us no trouble. The Chinese were divided. They had their own domestic problems and never bothered us about our frontiers.

MELTING POT :- In 1914, we entered into a convention with Tibet which was not endorsed by the Chinese. We seem to have regarded Tibetan autonomy as extending to independent treaty relationship. Presumably, all that we required was Chinese counter-signature. The Chinese interpretation of suzerainty seems to be different. We can, therefore, safely assume that very soon they will disown all the stipulation which Tibet has entered into with us in the past. That throws into the melting pot all frontier and commercial settlements with Tibet on which we have been functioning and acting during the last half a century.

China is no longer divided. It is united and strong. All along the Himalayas in the north and north-east, we have, on our side of the frontier, a population ethnologically and culturally not different from Tibetans of Mongoloids.

The undefined state of the frontier and the existence on our side of population with its affinities to Tibetans of Chinese have all the elements of potential trouble between China and ourselves. Recent and bitter history also tells us that Communism is no shield against imperialism and that Communists are as good or as bad as imperialists as any other. Chinese ambitions in this respect not only cover the Himalayan slopes on our side but also include important parts of Assam.

They have their ambitions in Burma also. Burma has the added difficulty that it has no McMahon line round which to build up even the semblance of an agreement.

IDEOLOGICAL CLOAK :- Chinese irredentism and Communist imperialism are different from the expansionism or imperialism of the Western powers. The former has a cloak of ideology which makes it ten times more dangerous. In the guise of ideological expansion lie concealed racial, national and historical claims.

The danger from the north and north-east, therefore, becomes both communist and imperialist. While our western and north-western threats to security are still as prominent as before, a new threat has developed from the north and north-east. Thus, for the first time, after centuries, India's defense has to concentrate itself on two fronts simultaneously. Our defence measures have so far been based on the calculation of superiority over Pakistan.

In our calculations we shall now have to reckon with Communist China in the north and north-east-a Communist China which has definite ambitions and aims and which does not, in any way, seem friendly disposed towards us.

Let me also consider the political considerations on this potentially troublesome frontier. Our northern or north-eastern approaches consist of Nepal, Bhutan, Sikkim, Darjeeling and the tribal areas in Assam. From the point of view of communication they are weak spots. Continuous defensive lines do not exist. There is almost an unlimited scope for infiltration. Police protection is limited to a very small number of passes. There too, our outposts do not seem to be fully manned.

शेष भाग अगले अंक में.....

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए
आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

न्याय-दर्शन का अध्यापन

महर्षि गौतम प्रणीत **न्याय-दर्शन** और उस पर लिखा **वात्स्यायन-भाष्य** प्रमाण व अर्थतत्त्व को समझने की प्रक्रियाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। सभी वैदिक-अवैदिक दर्शनों को अपने मान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय इस पद्धति का प्रयोग करना अपेक्षित होता है। न्याय-दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'प्रमाण' है। 'प्रमाण' को ठीक प्रकार जानने से ही तत्त्वनिश्चय ठीक हो पाता है, तभी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो पाता है। प्रमाण ज्ञान से चिंतन-विचार की प्रक्रिया ठीक हो पाती है, नहीं तो अनजाने में मिथ्या सिद्धान्त गले पड़ जाते हैं। न्याय-दर्शन के अध्ययन से किसी भी बात की परीक्षा-समीक्षा की सामर्थ्य बढ़ती है और उचित-अनुचित का निर्णय सरलता-शीघ्रता-शुद्धता से हो पाता है। इस प्रकार यह शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में स्वामी विष्वङ् द्वारा (वैशाख शुक्ल द्वितीया २०७१, १ मई २०१४) से इसका विधिवत् नियमित संपूर्ण अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन १०-११ महीनों में मार्च-अप्रैल २०१५ तक पूर्ण होगा। इस बीच प्रत्येक अध्याय की लिखित परीक्षा भी ली जायेगी। कुल ५ परीक्षाएँ होंगी। इनमें ७५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को '**न्यायाचार्य**', ६१ से ७५ प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-विशारद**' व ५१ से ६० प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-प्राज्ञ**' की उपाधि दी जायेगी। इस कक्षा में संस्कृत से परिचित साधक प्रकृति के ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। इसमें बुद्धिमान्, स्वस्थ, अपने कार्यों को स्वयं करने में समर्थ, सेवाभावी, अनुशासन में रह सकने वाले अधिकतम २० पूर्णकालिक व्यक्तियों का स्थान है।

इस काल में प्रातः व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

राष्ट्रोन्नति में महिलाओं का योगदान

- सुधा सावन्त

जब राष्ट्र की चर्चा हो और उसकी उन्नति में महिलाओं के योगदान की बात की जाए तो मुझे यजुर्वेद का एक मन्त्र याद आ जाता है जिसमें राष्ट्र की पहचान इस तरह कराई गई है। मन्त्र है:-

तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्त्विडा सरस्वती भारती। मही गृणाना।

यजुर्वेद २७/१९

इस मन्त्र की व्याख्या स्वामी विद्यानन्द विदेह जी ने इस प्रकार की है- राष्ट्र का निर्माण करने वाली तीन देवियाँ हैं- मातृभाषा, मातृसंस्कृति और दुलारमयी मातृभूमि। तीनों ही शब्द स्त्रीलिंग वाची हैं, इससे वैदिक ऋषि यह बताना चाहते हैं कि महिलाएँ राष्ट्र की नींव हैं। वे केवल राष्ट्र की नींव ही नहीं हैं, बल्कि राष्ट्र रूपी भवन को बनाने, सजाने संवारने और निखारने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और वे कोई हाड़-माँस की देवियाँ नहीं हैं। उनकी कोई प्रतिमा नहीं बन सकती। वे तो देश की, राष्ट्र की पहचान हैं। राष्ट्र भाषा से, राष्ट्र की संस्कृति से और राष्ट्र की भूमि से राष्ट्र का निर्माण होता है। यूँ भी हमारी वैदिक संस्कृति में स्त्रियों को बहुत सम्मान दिया गया है। हम कहते हैं

''मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव।''

या **''मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।''**

सभी में माता का स्थान प्रथम है। अतः मैं तो कहूँगी कि राष्ट्र के निर्माण में व उन्नति में महिलाओं का योगदान सर्वोपरि है। हम राष्ट्र की कर्णधार हैं। बस हम इसको अनुभव करें और राष्ट्र को उन्नत बनाएँ।

आप देखिए ईश्वर ने भी स्त्री को ही इस योग्य बनाया कि वह सृष्टि के विकास का माध्यम बने। महिलाएँ ही शिशु को गर्भ में धारण कर उसे नौ महीनों तक सुरक्षित रखती हैं, फिर जन्म देकर पालन-पोषण कर बड़ा करती हैं। फिर आचार्य के समीप शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजने से पहले वही उसकी प्रथम शिक्षिका बनती हैं। गुरुकुल में आचार्य को भी माँ के समान कहा गया है और बताया गया है कि आचार्य ब्रह्मचारी को अपनी कोख में धारण करता है और शिक्षा के माध्यम से उसे पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करता है, ताकि उसी ज्ञान के सहारे वह शिष्य अपने जीवन की जिम्मेदारियों का निर्वाह ठीक से कर सके।

मानसिक रूप से ईश्वर ने स्त्रियों को अधिक सबल और सन्तुलित बनाया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह पर स्त्रियों का अधिक नियन्त्रण रहता है। हम इस विचार को भी अपने में दृढ़ता से अपनाएँ और अधिक विश्वास के साथ देश की उन्नति के कामों में लगें। अच्छी शिक्षा प्राप्त करें और विश्वास रखें कि हम सब कार्य कर सकते हैं।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के विषय में कहा जाता है कि जब वह छोटी ही थी तो अपने मुँह बोले भाई नाना साहब के साथ घुड़सवारी करती थी, तीर-तलवार चलाती थी। जब उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हो गया तो वहाँ भी उन्होंने अपनी सखियों को तीर-तलवार चलाना सिखाया, घोड़े की सवारी करना सिखाया और एक सेना केवल स्त्रियों की ही तैयार कर ली थी। अंग्रेजों के साथ जब उनका युद्ध हुआ तो अंग्रेज भी उनकी तलवारों के वार देखकर आश्चर्य करते थे। अंग्रेज इतिहासकारों का मानना है कि सन् १८५७ के युद्ध में झांसी की रानी सब से योग्य सेनापति के रूप में सामने आई। यदि ऐसे ही योग्य और कुशल कुछ अन्य सेनापति भी होते तो अंग्रेजो को सन् १८५७ में ही भारत छोड़ना पड़ता।

आज हमें शत्रु से इस रूप में आमने-सामने का युद्ध नहीं करना है तो अन्य रूप से स्त्रियाँ सबल और सजग होकर देश का उद्धार कर सकती हैं। आज देश के सामने भ्रष्टाचार, व्यभिचार की विकराल समस्या है। कुशिक्षा, कुपोषण की समस्या है और इनका निवारण महिलाएँ बड़ी जिम्मेदारी से कर सकती हैं। कुशिक्षा भारत में बड़ी बाधा बनकर खड़ी है। हम बालिकाओं को तो पढ़ाना ही नहीं चाहते। गांवों में विशेषकर यह सोच लेते हैं कि इन्हें पढ़ाने से तो कोई लाभ नहीं, इन्हें तो घर-गृहस्थी ही देखनी है। जबकि महिलाएँ देश की आधी जनसंख्या का निर्माण करती हैं। यदि लड़कियों को पढ़ाएँ, लिखाएँ तो उच्चशिक्षा प्राप्त कर वे भी देश के महत्त्वपूर्ण कामों में योगदान दे सकती हैं। पति-पत्नी दोनों मिलकर परस्पर सहयोग के साथ गृहस्थ चला सकते हैं। इस प्रकार परिवार को, समाज को और अन्ततः सम्पूर्ण राष्ट्र को महिलाओं की कुशलता का योगदान मिल सकता है।

महिलाओं के हृदय में सहानुभूति और ममत्व का भाव विशेष रूप से होता है। इसीलिए हम देखते हैं कि बच्चों के लिए प्राथमिक कक्षाओं में विशेषरूप से महिलाएँ ही अध्यापन का कार्य करती हैं। किन्तु अब तो वे अन्य

क्षेत्रों में भी बड़े दायित्व के साथ कार्य कर रही हैं। वे सरकारी कार्यालयों में काम कर रही हैं। देश की सुरक्षा के लिए सेना में भर्ती हो रही हैं, पुलिस अधिकारी बन रही हैं और देश की सुरक्षा में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। यद्यपि स्त्रियों की जनसंख्या के अनुपात में उनकी यह संख्या, यह अनुपात कम ही है, परन्तु उन्हें यदि अवसर मिले तो वे जीवन के सभी क्षेत्रों में बढ़-चढ़ कर काम कर सकती हैं।

आज इस बात की आवश्यकता है कि महिलाएँ अपने को शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक दृढ़ बनाएँ। अन्धविश्वास और अंध-पूजा से अपने को दूर ही रखें। आज जगह-जगह ढ़ोंगी धर्मगुरु अपने-अपने आश्रम चला रहे हैं। वहाँ स्त्रियों की संख्या अधिक होती जा रही है। वे उन ढ़ोंगी साधुओं के बहकावे में आकर अपने धन से भी हाथ धो बैठती हैं और अपनी इज्जत भी नहीं बचा पाती हैं। यह सब उनकी मानसिक कमजोरी के कारण और अधूरी शिक्षा के कारण होता है। उन्हें पढ़ लिखकर अपनी आत्मशक्ति पर विश्वास करना चाहिए। इन धर्म गुरुओं की कृपा या जादू-टोने पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

आइए, फिर से यजुर्वेद के मन्त्र की चर्चा करते हुए हम समझे कि राष्ट्र का निर्माण करने वाली तीन देवियाँ हैं- मातृभाषा, मातृसंस्कृति और मातृभूमि, तो हम महिलाएँ मिलकर इन तीनों को सबल बनाएँ, सशक्त बनाएँ।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यह बात बहुत अच्छी तरह समझ ली थी और इसीलिए वे यद्यपि संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे, वेदों के ज्ञाता थे, मातृभाषा उनकी गुजराती थी, किन्तु बाद में उन्होंने प्रवचन की भाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया और अपने तीनों महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, सत्यार्थ-प्रकाश, संस्कार विधि और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका हिन्दी में लिखवाये। इस तरह ज्ञान का प्रचार-प्रसार अधिक लोगों तक हो सका। हमारी राष्ट्रभाषा को बल मिला। हम आशा करेंगे कि अब महिलाएँ राष्ट्रभाषा को अपनाएँगी। वे सभी वेदादि ग्रन्थ पढ़ें, पढ़ाएँ और सही अर्थों में आर्य बनें।

दूसरी पहचान है हमारी मातृसंस्कृति। संस्कृति से हमारा तात्पर्य है धर्म, हमारी परम्पराएँ, वेशभूषा व हमारा खानपान। इसके लिए मैं महिलाओं को बधाई देना चाहूँगी कि उन्होंने अपनी वेशभूषा को पूरी तरह नहीं छोड़ा है। वे साड़ी पहनती हैं। वे हिन्दी बोलने में गर्व का अनुभव करें। घर में बड़ों का सम्मान करें और संयुक्त परिवार जो कि हमारी संस्कृति की पहचान है, उसे बनाए रखें।

राष्ट्र की तीसरी पहचान है- दुलारमयी मातृभूमि। जिस मातृभूमि का अन्न-जल ग्रहण करके हम बड़े हो रहे हैं, जहाँ शिक्षा पाकर हम अपने को योग्य बना रहे हैं, हमें चाहिए उस पूजनीया मातृभूमि की हम हर तरह सेवा करें। डॉक्टर, इंजीनियर बनकर या अन्य प्रकार से ज्ञानवर्धन करके भारत में ही रहकर भारतवासियों की सेवा करें।

इसके साथ ही मुझे एक वेद मन्त्र और याद आ रहा है, जिसमें देश का नेतृत्व करने वाली नारियों का रूप और व्यवहार कैसा होना चाहिए- उसका बहुत सुन्दर वर्णन है- मन्त्र इस प्रकार है-

आलाक्ता, रुरुशीर्ष्ण्यथो यस्या अयो मुखम्।
इदं पर्जन्यरेतस इष्वै देव्यै बृहन्नमः।।

ऋग्वेद ६/७५/१५

ऋग्वेद में ऋषि कहते हैं नारियाँ सुन्दर हों, सुशील हों परन्तु साथ ही वीरांगना और शस्त्र धारण करने वाली भी हों। वे मधुर भाषिणी हों पर उचित समय पर विकराल मुख वाली भी हों। वे आनन्द की वर्षा करने वाली भी हों और शत्रु पर विषबुझे तीर बरसाने वाली भी हों। ऐसी देवियों को बार-बार नमस्कार है।

६०९, सैक्टर २९, नोएडा-२०१३०३

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत संचालित आर्य गुरुकुल सलखिया, जिला रायगढ़, छत्तीसगढ़ के अधिष्ठाता स्वामी रामानन्द को उनकी अनधिकृत, अवैध, अनुचित व अनुशासनहीनता पूर्ण प्रवृत्तियों व गतिविधियों के कारण परोपकारिणी सभा ने गुरुकुल सलखिया के समस्त पद एवं दायित्व से मुक्त कर दिया है।

सभी आर्यजन व दानदाताओं से निवेदन है कि स्वामी रामानन्द को परोपकारिणी सभा से सम्बन्धित आर्य गुरुकुल सलखिया के लिए कोई धन राशि अथवा अन्य सामान दान के रूप में प्रदान न करें।

- मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८८.	सौवर	५.००
८९.	पारिभाषिक	२०.००
९०.	धातुपाठ	
९१.	गणपाठ	२०.००
९२.	उणादिकोष	
९३.	निघण्टु	१५.००
९४.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	
९५.	व्यवहारभानुः	१२.००
९६.	निरुक्त (मूल)	८०.००
९७.	अष्टाध्यायी (मूल)	२०.००
९८.	अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द	१२०.००
९९.	अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द	१००.००
१००.	अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द	१३०.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

१०१.	महर्षि दयानन्द– आत्मकथा	
१०२.	उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन)	
१०३.	परोपकारिणी सभा का इतिहास	
१०४.	आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार	१०.००
१०५.	आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा	८.००
१०६.	दयानन्द–सूक्ति–मुक्तावली	१५.००
१०७.	देशभक्त कुँ.चाँदकरण शारदा	५.००
१०८.	दयानन्द वचनामृत	३.००
१०९.	आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी	१०.००

वेदगोष्ठी– सम्पादक डॉ. धर्मवीर

११०.	ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली	२०.००
१११.	वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग	३१.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
११२.	अथर्ववेदः समस्याएं और समाधान	३५.००
११३.	वेद और विदेशी विद्वान् – कृतित्व और दृष्टिभेद	३५.००
११४.	वेदों के आख्यान (प्रथम भाग)	३५.००
११५.	वेदों के दार्शनिक विचार	४०.००
११६.	सोम का वैदिक स्वरुप	५०.००
११७.	पर्यावरण का वैदिक स्वरुप	
११८.	वेद और समाज	
११९.	वेद और राष्ट्र	
१२०.	वेद और विज्ञान	
१२१.	वेद और ज्योतिष	८०.००
१२२.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–१)	५०.००
१२३.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–२)	५०.००
१२४.	वेद और निरुक्त	१००.००
१२५.	वेद और इतिहास	१००.००
१२६.	वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	१००.००
१२७.	वेद और शिल्प	
१२८.	वेदों में अध्यात्म	
१२९.	वेदों में राजनैतिक विचार	१००.००
१३०.	वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	
१३१.	वैदिक समाज विज्ञान	
१३२.	सत्यार्थ प्रकाश ७वाँ समुल्लास और वेद	
१३३.	सत्यार्थ प्रकाश ८वाँ समुल्लास और वेद	

प्रो. धर्मवीर

१३४.	आर्यसमाज और शोध	१५.००
१३५.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र	

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	स्वामी विष्वङ् परिव्राजक	
१३६.	ध्यान योग एवं रोग निवारण	१५०.००
१३७.	योग	५०.००
१३८.	अष्टाङ्ग योग	२०.००
१३९.	समाधि	१००.००
	स्वामी अभयानन्द सरस्वती	
१४०.	प्राणायाम चिकित्सा	
	डॉ. सत्यदेव आर्य	
१४१.	वैदिक सन्ध्या मीमांसा	२५.००
१४२.	ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का विवेचन	२५.००
१४३.	तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु का वैज्ञानिक विवेचन	२५.००
	विरजानन्द दैवकरणि	
१४४.	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	८.००
१४५.	महाभारत युद्ध कब हुआ एवं अन्य रचनाएँ	५.००
	वैद्य पंडित ब्रह्मानन्द त्रिपाठी	
१४६.	बूंदी शास्त्रार्थ	५.००
१४७.	वैदिक सूक्ति–सुमन	२५.००
	वैदिक साहित्य – विविध ग्रन्थ	
१४८.	दयानन्द ग्रन्थमाला तीन खंड का १ सेट	५५०.००
१४९.	आर्य समाज की मान्यताएं	२०.००
१५०.	मानव निर्माण के स्वर्ण सूत्र	१५.००
१५१.	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका (सजिल्द)	२५.००
१५२.	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका अजिल्द	१५.००
१५३.	ऋग्वेद का नमूना भाष्य (१मंत्र)	४.००
१५४.	ईशादिदशोपनिषद् (मूल)	१०.००
१५५.	वैदिक कोषः (निघण्टु मणिमाला)	२५.००
१५६.	सरस्वती की खोज एवं महाभारत युद्धकाल	१०.००
१५७.	दयानन्द दिव्य दर्शन	१२.००
१५८.	वृक्षों में जीवात्मा	१०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१५९.	महर्षि दयानन्द जीवन और सन्देश	३.००
१६०.	महर्षि महिमा	२.००
१६१.	स्वामी दयानन्द चरितम्	१०.००
१६२.	ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	८.००
१६३.	निरुक्तकार का ऐतिहासिक पक्ष	५.००
१६४.	मांसाहार– वैदिक धर्म एवं विज्ञान	१२.००
१६५.	नेपाली सत्यार्थ प्रकाश	२००.००
१६६.	परोपकारी विशेषांक	२५.००
१६७.	महर्षि दयानन्द के चित्र (एक प्रति)	५०.००
१६८.	संगठन सूक्त	२.००
१६९.	३१ दिवसीय टेबल कलेण्डर	१००.००
१७०.	प्यारा ऋषि	२५.००
१७१.	नककटा चोर	३०.००
१७२.	महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी	३५.००
१७३.	स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य	३५.००
१७४.	भगवान् को क्यों मानें ?	२५.००
१७५.	महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय	३०.००
१७६.	आर्यसमाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५.००
१७७.	शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़	२५.००
१७८.	नैति मंजूषा	९५०.००
१७९.	ऋग्वेदादि संदेश	३०.००
१८०.	त्याग की धरोहर	१००.००
	ध्यान योग एवं रोग निवारण (सी.डी.)	
	(स्वामी विष्वङ् परिव्राजक)	
१८१.	अष्टांग योग–१ (सी.डी.)	
१८२.	अष्टांग योग–२ (सी.डी.)	
१८३.	आसन (सी.डी.)	
१८४.	सूक्ष्म व्यायाम (सी.डी.)	

शेष भाग अगले अंक में.......

जिज्ञासा समाधान – ६२

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा कर्त्ताओं से निवेदन है कि जिज्ञासा भेजने के बाद उत्तर की प्रतीक्षा करें, बार-बार उसी जिज्ञासा को न भेंजे। हम यथा समय आपकी जिज्ञासाओं का समाधान करने का प्रयत्न करेंगे। – सम्पादक

जिज्ञासा १- आदरणीय, मेरी मृत्यु पर कुछ शंका है कृपया निराकरण कर जागृत करने की कृपा करें।

स्वभाविक मृत्यु?- अकस्मात् मृत्यु

१. दो दिनों के बच्चे के पीलिया अथवा अन्य व्याधियों से मृत्यु।
२. नवयुवक खेलते हुए ... तथा कुछ क्षणों में मृत्यु।
३. ५०-५५ वर्ष की आयु स्वस्थ शरीर १-२ दिन दस्तों से पीड़ित रहने के उपरान्त मृत्यु।
४. ८०-८२ वर्ष अवस्था में मृत्यु पीडित रहे, इलाज से ठीक हुए उपरान्त चलते हुए ठोकर लगी गिरा मृत्यु।
५. ९०-९२ वर्ष की आयु में गुर्दे आदि के रोग से उपचार के बीच मृत्यु।

मेरा अपना विचार है कि ईश्वर आयु का निर्धारण न कर श्वास पर आधारित जीवन देता है, श्वास पूरी होने पर किसी न किसी बहाने से मृत्यु होती है क्योंकि मृत्यु में ईश्वर दोषी नहीं बनना चाहते। इसलिए आज भी एक कहावत चली आ रही है, मृत्यु के लिए बहाना बन जाता है।

कृपया मेरी शंका का समााधान करने की कृपा करें।

– **देवपाल**

समाधान १- जो उत्पन्न हुआ है, वह नष्ट भी होता है। जन्म है तो मृत्यु भी अवश्यम्भावी है। मृत्यु के विषय में लोगों का भिन्न-भिन्न मत है। कुछ लोग सभी प्रकार की मृत्यु अर्थात् रोग-शोक, दुर्घटना आदि से होने वाली मृत्यु को स्वभाविक मानते हैं। क्यों न वह मृत्यु बचपन, किशोर, युवावस्था वा वृद्धावस्था में हुई हो। उनका कहना होता है कि सबके श्वास ईश्वर ने निश्चित कर रखे हैं। कुछ लोग ऐसा नहीं मानते, उनकी मान्यता है कि हम अपने श्वासों को अर्थात् आयु को घटा, बढ़ा सकते हैं, अनुकूल-प्रतिकूल आहार-विहार, आचार-विचार करके। उनका तात्पर्य है कि श्वास निश्चित नहीं हैं। उनका यह विचार अधिक तर्क संगत है।

ये स्वाभाविक और अस्वाभाविक मृत्यु क्या है? इसका उत्तर है, जो हमें शरीर मिला है, उसका जर्जर होकर छूट जाना स्वभाविक मृत्यु है, इसके अतिरिक्त जो भी रोग-शोक आदि से मृत्यु होती है वह सब अस्वाभाविक मृत्यु है। आपने जो भी उदाहरण दिये हैं वे सब प्राय: अस्वभाविक मृत्यु के हैं। इस बात का कोई वैदिक आधार नहीं है कि हमारे श्वास निश्चित हैं। यदि श्वास निश्चित ही होते तो रोगी का ओषधोपचार करना, चिकित्सालय खोलना, स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम-प्राणायाम आदि करना, ये सब व्यर्थ हैं। हमारा भोजन आदि करना भी व्यर्थ है क्योंकि आपकी मान्यतानुसार श्वास तो निश्चित हैं, उतने श्वासों तक तो हमें जीयेंगे ही। यदि इस श्वास को निश्चित वाली अवैदिक मान्यता को मानते हैं तो संसार के मनुष्यों के उद्योग का बहुत बड़ा भाग जो कि मनुष्य उसको जीने के लिए करता है, वह व्यर्थ सिद्ध होगा। इसलिए वैदिक मान्यतानुसार श्वासों को निश्चित न मानकर उद्योग करते हुए सुखपूर्वक जीवन जीने का यत्न करते रहें।

यह कहना कि ''मृत्यु श्वास पूरी होने तक किसी बहाने से होती है क्योंकि ईश्वर इसमें दोषी नहीं बनना चाहते'' उचित नहीं। क्योंकि यह कथन तभी कहा जायेगा जब व्यक्ति ईश्वर के स्वरूप व सिद्धान्त को ठीक नहीं समझ रहा होता। जब श्वास पूरी हो गई है और बिना बहाने शरीर छूट रहा है तो इसमें ईश्वर दोषी कैसे बनेगा? दोषी तो तब होवे जब श्वास पूरे न हुए हों और किसी बहाने से मृत्यु हो रही हो अथवा श्वास पूरे होने पर किसी बहाने से मृत्यु करें क्योंकि श्वास पूरे होने पर भी रोगादि का बहाना बनाना दोष की कोटि में आवेगा क्योंकि श्वास पूरे होने पर भी रोगादि का दु:ख भोगना पड़ रहा है। इसलिए यह कहना कि 'ईश्वर दोष से बचना चाहते हैं' सर्वथा असंगत है, क्योंकि ईश्वर के सर्वज्ञ व न्यायकारी होने से वह कहीं कभी दोष को प्राप्त होता ही नहीं, तो उससे बचना कैसा।

समाज में अनेक सारे मिथ्या विचार प्रचलित हो जाते हैं, वे परम्परा से चलते रहते हैं। अविद्वान् लोग इन विचारों को ही ठीक मानने लग जाते हैं और हानि करते रहते हैं। 'मृत्यु के लिए बहाना बन जाता है' यह विचार भी सैद्धान्तिक नहीं है। यदि इसको ठीक मानकर चलते हैं तो क्यों हत्या करने वालों को जेल में डाला जाता है, क्योंकि वे तो बहाना

मात्र थे, सामने वाले की मृत्यु तो होनी ही थी। किन्तु हम ऐसा नहीं करते, अपराधी को दण्ड दिलवाते अथवा देते हैं। इससे पता चलता है कि वह बहाना नहीं था अपितु मरने वाले के प्रति अन्याय था। इस विषय में विस्तार से फिर कभी लिखेंगे अभी इतना ही।

जिज्ञासा २- आदरणीय सादर नमस्ते, मैंने एक पत्र पहले भी आपको लिखा था परन्तु कोई उत्तर नहीं आया, अब मैं उसी विषय पर दोबारा पत्र आपको लिख रहा हूँ। आशा है इस बार आप उत्तर अवश्य देंगे।

स्वामी जी ने संस्कार विधि में सोलह संस्कारों में अन्त्येष्टी संस्कार के बाद कुछ नहीं लिखा एक और सभा सब परिवार वाले प्राणी के मरने के बाद जरूर करते हैं और वह है 'श्रद्धाजंलि' कार्यक्रम। सब आर्यसमाजी भी इस कार्यक्रम को करते हैं परन्तु सब अपने ही मन के अनुसार करते हैं। आर्य समाजियों में इसमें भी एकता लाना बहुत जरूरी है। इस विषय पर मैं एक मासिक पत्र की कटिंग भेज रहा हूँ, कृपया इस पर अपनी अध्यात्मिक विद्वत् गोष्ठी में भी चर्चा करा कर, अपना निर्णय परोपकारी में छाप देवें जिससे समाजियों में एकरूपता हो सके।

आशा है आप मेरे सुझाव को ठीक समझेंगे और विचार करेंगे।

सत्यपाल गुप्ता, १०, रामा स्टेट, दयाल हग गुरुद्वारा रोड, महेश नगर, अम्बाला केन्ट-१३१००१

समाधान २- आपने अपना विचार रखा कि 'अन्त्येष्टि के बाद मृतक के परिवार वाले क्या करें?' इस विषय में विद्वत् गोष्ठी में चर्चा की जाये और निर्णय परोपकारी में छापा जाये। आपके इस विचार का हम स्वागत करते हैं। आगे भविष्य में कभी अनुकूलता हुई तो अवश्य इस विषय पर विचार किया जावेगा।

अभी इस विषय में महर्षि दयानन्द के अनुसार कुछ लिखते हैं। महर्षि की मान्यतानुसार अन्त्येष्टी के बाद अस्थि संचयन से पृथक् मृतक के लिए कोई भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है। आज वर्तमान में अन्तिम संस्कार के बाद भी अनेक अवैदिक आडम्बर चल रहे हैं, जिससे समाज की बड़ी हानि हो रही है। कुछ वैदिक धर्मियों को छोड़कर अन्य इस पाखण्ड जाल में फंसे हुए हैं। मृतक श्राद्ध करना, मृतक की राख को गंगादि नदियों में बहाना, गरुड़ पुराण का पाठ करना-करवाना, ब्राह्मणों को भोज कराना, पाखण्डियों को बहुतसा दान देना, वैतरणी पार करने के लिए गोदान करना आदि सब अवैदिक कर्म हैं।

हाँ यदि व्यक्ति सम्पन्न है तो वह अपने जीते-जी वा मरने के पश्चात् उनके सम्बन्धी जन वेद विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए जितना धन व्यय करे उतना अच्छा है।

आजकल अन्त्येष्टी के बाद किसी दिन विशेष पर जो श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम होता है कि जिसको 'शोक सभा' भी कहते हैं यथार्थ में उसको शोक सभा न कहकर शोक निवारण सभा कहना चाहिए। श्रद्धाञ्जलि सभा किस प्रकार हो इसके लिए आपने जो एक लेख की प्रतिलिपि भेजी है उसमें काफी कुछ ठीक लिखा है। फिर भी अपने विचार यहाँ रख रहे हैं। श्रद्धाञ्जली सभा में सबसे पहले मृतक परिवार वालों से यज्ञ करवाया जाये। मृतक चित्र रखना चाहें तो रख ले अन्यथा उसकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। चित्र रखने पर उसके सामने फूलमाला, फूल, धूप-अगरबत्ती, दीपक जला कर रखने की आवश्यकता नहीं है, यदि ऐसा करते हैं तो वह अवैदिक कर्म होगा। हमारे विचार में वहाँ फूल व फूलमाला लानी ही नहीं चाहिए। यज्ञ के पश्चात् मृतक के प्रति जो लोग प्रतिभाव प्रकट करना चाहते हों वे प्रतिभाव प्रकट करें व मृतक परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करें। इस अवसर पर कोई योग्य वैदिक विद्वान् अवश्य होवे कि जिसके उपदेश से सबके मन शोक को छोड़ प्रसन्नता को प्राप्त हो। इस अवसर पर यदि परिवार जन वेद विद्या के लिए, दीनों की सहायतार्थ वा अन्य परोपकार के लिए दान करना चाहें तो अवश्य करें, यह उनके लिए पुण्य कार्य होगा। इसके पश्चात् परिवार जन सबको आदर पूर्वक विदा करे।

इन विचारों के अतिरिक्त विद्वत्जनों का जो विचार आयेगा उसका हम स्वागत करेंगे।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया

सभी विद्वानों व परोपकारी के सुधी पाठकों से निवेदन है कि अपना नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता (पिन कोड सहित), दूरभाष संख्या और ई-मेल किसी भी माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें जिससे कि परोपकारिणी सभा के वर्तमान के पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया में सहयोग मिल सके।

पुस्तक - परिचय

१. **पुस्तक**- वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वर।
संकलन- ज्ञानेश्वरार्य, एम.कॉम. दर्शनाचार्य
प्रकाशक- वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़, गुजरात

ईश्वर के विषय में वैज्ञानिकों का दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न रहा है। कुछ एक वैज्ञानिक ईश्वर को सर्वथा ही नकारते हैं। उनकी दृष्टि में ईश्वर नाम की कोई चीज है ही नहीं। संसार का कोई कर्त्ता भी है इसको वे स्वीकार नहीं करते, इसको अपने आप बना हुआ मानते हैं। कुछों की मान्यता है कि इस संसार को बनाने वाला कोई न कोई तो है और वह ईश्वर हो सकता है, उसको ईश्वर कहा जा सकता है। कुछ वैज्ञानिक इस विषय में मौन रहना ही ठीक समझते हैं।

आज विज्ञान का युग है, जिस बात को विज्ञान प्रामाणिक कर देता है उस बात को प्राय: सर्वथा मान लिया जाता है। विज्ञान का इतना अधिक प्रभाव वर्तमान समाज पर है कि अनेक बातें युक्ति युक्त ठीक होते हुए भी वर्तमान के विज्ञान से मेल नहीं खा रही, तो उसको लोग सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते। ऐसा ही ईश्वर के विषय में है, ईश्वर युक्ति, तर्क, प्रमाण से सिद्ध है। ऐसा होने पर भी वर्तमान विज्ञान से प्रभावित नास्तिक लोग ईश्वर को नहीं स्वीकारते। ऐसे नास्तिकों के लिए, उन वैज्ञानिकों के विचार पढ़ने योग्य हैं जो ईश्वर को स्वीकारने व उसमें आस्था रखते हैं।

ईश्वर को स्वीकारने वाले वैज्ञानिकों का संकलन आर्यजगत् के प्रतिष्ठित दर्शनों के विद्वान् आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने ''वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वर'' पुस्तक रूप में किया है। इस पुस्तक में बड़े-बड़े ३० वैज्ञानिकों के विचारों का संकलन है।

जीव विज्ञानविद् स्वरी कॉलेज के विज्ञान, गणित विभागध्यक्ष प्रो. सेसिल वोइस हैमान कहते हैं ''हाँ मुझे ईश्वर में विश्वास है, जो केवल सर्वशक्तिमान् देवता ही नहीं है और जिसने इस जगत् की रचना ही नहीं की है एवं इसे धारण ही नहीं किया है, अपितु वह ऐसा ईश्वर है, जिसको अपनी सृष्टि के सर्वोत्कृष्ट प्राणी मनुष्य की चिन्ता भी है।''

शरीर क्रिया विज्ञानविद् एण्ड्रयू कौन्वे आइवी ईश्वर विषय में कहते हैं ''जब मैं तीन साल का था, तब मैंने अपने माँ-बाप से पूछा- मुझे किसने बनाया, पक्षियों को किसने बनाया, हमारी गाय को किसने बनाया, इस संसार को किसने बनाया? जीवन के तथ्य या मेरे इन्द्रियानुभव, मेरे विकसित होते हुए मन पर ऐसी क्रिया कर रहे थे कि मेरा बालमन और मेरी निश्छल बुद्धि भी इस परिणाम पर पहुँची थी कि कोई भी यन्त्र बिना निर्माता के नहीं बन सकता।'' इस प्रकार के विचार इस लघु पुस्तिका में हैं। पुस्तक के आवरण के पृष्ठ भाग में १६ प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के चित्र हैं, जो पुस्तक की शोभा को और अधिक बढ़ा रहे हैं। धवल कागज पर स्पष्ट छपाई व आकर्षक आवरण युक्त यह पुस्तक पाठकों को ईश्वर के प्रति विश्वास उत्पन्न करेगी, ऐसी आशा है।

- सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

२. **पुस्तक**- राज्य व्यवस्था कैसी हो?
लेखक- महात्मा चैतन्यमुनि
प्रकाशक- सरस्वती साहित्य संस्थान-२९५, जागृति एन्क्लेव, विकास मार्ग, दिल्ली-९२
मूल्य- २५/- रु. **पृष्ठ संख्या**- ८०

आज सम्पूर्ण भूमण्डल पर स्वार्थ की राजनीति चल रही है। धन प्राप्त करने के लिए येन केन प्रकारेण यत्न करना सबसे बड़ा धर्म। धर्म का मर्म नहीं समझते। राजनीति-व्यवस्था का रूप क्या हो यह केवल अध्ययन काल तथा पाठ्यक्रम तक सीमित है। देश रसातल में चला जाय, देश के राजनेताओं को इससे क्या अभिप्राय? उन्हें अपनी रोटी सेकनी हैं। न्याय दण्ड-अपराधियों के लिए नहीं अपितु कर्मठ, देश सेवी, ईमानदार के लिए है। भारत में दण्ड कठोर थे, सभी के लिए समान व्यवस्था थी। हमारे शास्त्र, वेद, मनुस्मृति राज व्यवस्था को सुदृढ़ करने, धर्मानुसार हों।

लेखक ने इस हेतु राजा कैसा हो? राजा पर धर्म का अंकुश आवश्यक है, सभा-समितियाँ और मन्त्री कैसे हों? न्याय व्यवस्था कैसी हो? कर, सुरक्षा एवं सैनिक व्यवस्था, राजा और प्रजा का आपसी समन्वय कैसा हो? राष्ट्र-रक्षा व स्व-शासन का आधार चरित्र है। इसपर विस्तृत चर्चा मनुस्मृति ऋग्वेद, यजुर्वेद के श्लोकों के आधार पर की गई है।

धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः। - मनु
'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्', संगच्छध्वं संवदध्वं....
ऋग्वेद।

सम्पूर्ण लघु पुस्तिका के अध्ययन से पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगा। राजनीति का अन्धानुकरण न हो। धर्म व राजनीति का चोलीदामन का साथ है। आज के राजनेताओं पर तीखा प्रहार है। अपेक्षाएँ भी हैं। मुनि जी का प्रयास सफलीभूत हो यही अपेक्षा।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर

संस्था - समाचार

१ से १५ अप्रैल २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है तथा दोनों ही समय प्रवचन, स्वाध्याय आदि की व्यवस्था है। इन प्रवचनों-स्वाध्याय के क्रम में वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों को क्रमशः लिया जाता है, यथा- श्रद्धा सूक्त, पुरुष सूक्त (ऋ. १०/९०), हिरण्यगर्भ सूक्त (१०/१२१), वागम्भृणी सूक्त (ऋ. १०/१२५), नासदीय सूक्त (ऋ. १०/१२९), संगठन सूक्त (ऋ. १०/१९१), यजुर्वेद के ३१वें (पुरुषाध्याय), ३२वें अध्याय, ३४वें अध्याय (शिवसंकल्प), ४०वें अध्याय (ईशावस्य) आदि का स्वाध्याय कराया जाता है। अन्य ग्रन्थों में योगादि दर्शनों का तथा सत्यार्थप्रकाशादि महर्षिकृत ग्रन्थों का स्वाध्याय भी चलता रहता है।

इस प्रकार १ से १३ अप्रैल तक प्रातःकालीन यज्ञोपरान्त प्रवचनों में **स्वामी विष्वङ् जी** ने योगदर्शन के प्रथम पाद के तृतीय, चतुर्थ व पाँचवें सूत्र की व्याख्या प्रस्तुत की। **'तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्'** की व्याख्या करते हुए बताया कि (तदा) जब साधक अहिंसा आदि यम, शौच आदि नियम के सेवन से, इन यम-नियमों को अपने भीतर प्रतिष्ठित कर लेता है, तब मन अवरुद्ध हो जाता है, तब द्रष्टा आत्मा अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है। **'वृत्तिसारूप्यमितरत्र'** की व्याख्या में आपने बताया कि 'आत्मा का जो स्वरूप है, उस निजस्वरूप के यथावत् रहते हुए भी, वह (आत्मा) अपने को योग से अलग स्थिति में वृत्तियों के समान समझने लगता है। महर्षि वेदव्यास इस सूत्र में 'एकमेव दर्शनम् ख्यातिरेव दर्शनम्' का उद्धरण देते हुए स्पष्ट करते हैं कि क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त अवस्था में आत्मा- मन, इन्द्रिय, शरीर आदि में तथा अन्य जड़ पदार्थों यथा भूमि, गृह, धन आदि में एकत्व का दर्शन करता है, अर्थात् इनको अपना स्वरूप मानने लगता है, इनके पुष्ट होने पर अपना विकास, इनके विनष्ट होने पर अपना विनाश समझने लगता है। **'वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः'** मन में जो भी विचार आता है उसे योग की भाषा में वृत्ति कहा जाता है, मन की वृत्तियाँ अनन्त है। लेकिन इन्हें क्लिष्ट और अक्लिष्ट प्रकार वाली पाँच-पाँच भेदों में बाँटा जा सकता है।

सायंकालीन यज्ञोपरान्त प्रवचन के अन्तर्गत **स्वामी आशुतोष परिव्राजक जी** ने चार दिवसीय प्रवचन शृंखला में अपने अनुभवों को जिज्ञासुओं के समक्ष रखा। आपने ईशोपनिषद् के तीसरे मन्त्र की व्याख्या करते हुऐ बताया कि जो लोक अंधकार से, अज्ञान से ढके हुये हैं- आवृत्त हैं, उन लोकों में वही व्यक्ति जाते हैं, जो अपनी आत्मा का हनन करते हैं। जो अपनी आत्मा के स्वाभाव व उद्देश्यों के विरुद्ध चलते हैं, परमात्मा सदैव हमारे साथ रहता है, हमारी आत्मा के भीतर रहकर हमें सचेत करता रहता है, परन्तु हम अविद्या आदि दोषों के कारण उसको समझ नहीं पाते। हम स्वयं को शुद्ध बनायें और मोक्ष मार्ग में अग्रसर हों, क्योंकि वही अन्तिम पड़ाव है।

सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास का स्वाध्याय कराते हुय **आचार्य कर्मवीर जी** ने परीक्षा के पाँच प्रकारों पर चर्चा की। आपने बताया कि किसी भी बात या सिद्धान्त को स्वीकार करने से पहले हमें उसकी भली-भाँति परीक्षा कर लेनी चाहिये। परीक्षा पाँच प्रकार से होती है-

१. ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव व वेदों के अनुकूल हो। २. सृष्टिक्रम के अनुकूल हो। ३. आप्त अर्थात् धार्मिक विद्वानों के अनुकूल हो। ४. अपनी आत्मा के अनुकूल हो, एवं ५. प्रत्यक्षादि आठों प्रमाणों के अनुकूल हो।

आठों प्रमाणों की व्याख्या करते हुये आचार्य जी ने प्रत्यक्ष को समझाते हुये न्यायदर्शन का सूत्र उद्धृत किया- **'इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यादेश्यमव्यभिचारि-व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।'** जो इन्द्रियों का विषयों के साथ आवरण रहित सम्बन्ध होता है, इन्द्रियों के साथ मन का और मन के साथ आत्मा के संयोग से जो ज्ञान उत्पन्न होता है, उसे प्रत्यक्ष कहते हैं।

सान्निध्य- गत दिनों गुरुकुल ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारियों को आर्यसमाज के सुविख्यात लेखक, इतिहास के मर्मज्ञ डॉ. राजेन्द्र जिज्ञासु जी के प्रेरणादायी अनुभव प्राप्त हुये। जिज्ञासु जी ने व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों को समय दिया व महापुरुषों के जीवन के कुछ प्रेरणादायी संस्मरण सुनाकर सदैव उत्साहित रहने का संदेश दिया। आपने **'पावकाः नः सरस्वती'** मन्त्र की व्याख्या करते हुये कहा कि हमारा ज्ञान पवित्र होना चाहिये। वेद में ईश्वर को जिस नाम से सर्वाधिक पुकारा गया है, वो है- अग्नि। यूँ तो

ईश्वर को वायु और जल आदि अन्य नामों से भी सम्बोन्धित किया गया है, पर 'अग्नि' शब्द में ही ऐसी क्या विशेषता है कि यह नाम सर्वाधिक बार आया? जल और वायु दोनों ही शक्तिशाली होते हैं, इनका सदुपयोग किया जाये तो लाभकारी होते हैं और अनियन्त्रण या दुरुपयोग की स्थिति में विनाशकारी भी होते हैं। यही गुण अग्नि में भी है। परन्तु अग्नि में एक ऐसा गुण है, जो जल और वायु में नहीं है। वायु और जल में शक्ति तो होती है पर वे जिस पदार्थ के सम्पर्क में आते हैं, उस पदार्थ को स्वयं के जैसा नहीं कर सकते। अग्निमात्र एक ऐसा तत्व है, वह जिसके सम्पर्क में आता है, वह भी अग्नि बन जाता है। हम भी अपने जीवन में ज्ञान रूपी अग्नि को सदैव जलाये रखें। महापुरुषों के प्रेरणादायी जीवन को पढें। अपनी सोच को सकारात्मक बनाये। नकारात्मक बातों की ओर ध्यान ना देकर अपने लक्ष्य पर ध्यान रखें। 'हमें सब बातों (विषयों) का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान अवश्य होना चाहिये और साथ ही किसी एक विषय का विशेषज्ञ (पूरा ज्ञान) भी होना चाहिये।' जिज्ञासु जी ने अन्य भी कई प्रेरणादायी घटनायें सुनाईं व विद्यार्थियों को सदैव क्रियाशील रहने का संदेश दिया।

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि- हमारा पूरा शरीर पञ्च महाभूतों से बना हुआ है। इस शरीर का पालन-पोषण आहार से होता है, जिसे हम भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं। हम जैसा भोजन करते हैं, वैसा ही हमारा भौतिक शरीर बनता है। इसी विषय को लेकर वानप्रस्थी व्रतमुनि जी ने अपने विचार व्यक्त किये। आपने कहा कि यदि हम स्वयं को पवित्र, सात्विक रखना चाहते हैं तो आहार को भी शुद्ध, सात्विक रखना होगा।

२. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) ३० मार्च २०१४- आर्य केन्द्रिय सभा गाजियाबाद (उ.प्र.) के तत्त्वावधान में नवसम्वत्सर के उपलक्ष्य में यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा भारतीय नवसम्वत्सर के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

(ख) ३१ मार्च २०१४- अजमेर में डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा जी की सेवानिवृत्ति के अवसर पर आयोजित यज्ञ सम्पन्न करवाया। डॉ. दिनेश जी, आर्यसमाज के स्वाध्याय-शील कार्यकर्त्ता है, आप महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के उपकुलसचिव पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। वर्तमान में आप परोपकारिणी सभा के संयुक्त मन्त्री पद पर आसीन है।

(ग) ५-६ अप्रैल २०१४- आर्यसमाज उगरपुर, चितकाला (सहारनपुर, उ.प्र.) में व्याख्यान प्रदान किए।

(घ) ८ अप्रैल २०१४- श्री तपेन्द्र कुमार (वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, राजस्थान सरकार) के ज्येष्ठ पुत्र श्री आशीष जी का वाग्दान संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न करवाया।

(ङ) १२-१३ अप्रैल २०१४- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव में भाग लिया।

(च) १४-२० अप्रैल २०१४- ऋषि उद्यान में ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर में भावी-प्रशिक्षकों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) १६ से १८ मई २०१४- आर्यसमाज मण्डावली (दिल्ली) में व्याख्यान प्रदान करेंगे।

३. आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- गुरुकुल ऋषि उद्यान के व्यवस्थापक आचार्य कर्मवीर जी पिछले दिनों नागल (सहारनपुर) में प्रचारार्थ पधारे। आपके कार्यक्रम इस प्रकार रहे-

(क) १४ मार्च २०१४- बढ़ेड़ी, नागल के सज्जन मोहित जी के घर जन्मदिवस के उपलक्ष्य में हवन सम्पन्न करवाया।

(ख) १६ मार्च २०१४- होलिका पर्व के अवसर पर आर्यसमाज बढ़ेड़ी, नागल के द्वारा समायोजित यज्ञ को सम्पन्न करवाया। नागल के सार्वजनिक होलिका दहन स्थल के समीप समायोजित इस हवन में समस्त ग्रामवासियों के समक्ष आपने होली पर्व के सच्चे स्वरूप को बताया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागी महिलाओं की संख्या अधिक थी। आचार्य कर्मवीर जी के ब्रह्मत्व में महिला आर्यसमाज की कार्यकर्त्ताओं यथा- सृष्टि आर्या, सिमरन आर्या, राशि आर्या व आशु आर्या ने मन्त्रोच्चारण किया। कार्यक्रम की व्यवस्था में ओमवीर सिंह, विजयपाल आर्य, विनोद आर्य, अतुल आर्य व उनके सहयोगीगणों ने अपना पूरा सहयोग प्रदान किया।

(ग) १७ मार्च २०१४- ग्राम के संजील आर्य जी के घर हवन।

(घ) १८ मार्च २०१४- प्रात:काल श्री हेमन्त आर्य जी के पुत्र के जन्मदिन के उपलक्ष्य में हवन तथा सायंकाल श्री प्रमिल आर्य जी के यहाँ हवन।

(ङ) १९-२३ मार्च २०१४- आर्यसमाज नागल के कर्मठ कार्यकर्त्ता, वैदिक मिशनरी श्री विनोद आर्य जी के यहाँ यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस कार्यक्रम

में वेदपाठी के रूप में ब्र. रुद्रदत्त जी (गुरुकुल किग्जवे कैंप, दिल्ली) रहे। ग्राम के अनेक धार्मिक जनों ने इस कार्यक्रम का लाभ उठाया।

(च) २४ मार्च २०१४- ग्राम कुकावी, नागल, सहारनपुर के श्री पंकज आर्य जी के घर यज्ञ।

(छ) २७ मार्च २०१४- ग्राम बढ़ेड़ी नागल के श्री अतुल आर्य जी के यहाँ हवन सम्पन्न करवाया।

(ज) २८ मार्च २०१४- ग्राम गढ़ी धर्मपुर में शान्ति यज्ञ सम्पन्न करवाया।

(झ) २९ मार्च २०१४- ग्राम बढ़ेड़ी नागल के श्री मुकेश आर्य के घर यज्ञ।

(ञ) ३०-३१ मार्च २०१४- आर्यसमाज बिलासपुर, सहारनपुर के वार्षिकोत्सव में भाग लिया। इसमें अरुण आर्य जी (मेरठ), अम्बरेश आर्य (चन्देना), महाशय चन्द्रपाल सिंह जी भजनोपदेशक के रूप में उपस्थित थे।

(ट) १ अप्रैल २०१४- ग्राम आमकी दीपचन्दपुर, सहारनपुर के विपिन आर्य जी के घर में यज्ञ सम्पन्न करवाया।

- ब्र. प्रभाकर व दीपक आर्य

प्रतिक्रिया

१. आदरणीय सम्पादक, प्रो. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते,

परोपकारी (अक्टूबर २०१३-प्रथम) व नवम्बर-द्वितीय में प्रकाशित सुकामा आर्या के लेख क्रमशः 'दृढ विश्वास लगाए पार' व 'स्पष्टवादिता व्यवहार का मुख्य अंग' मुझे काफी प्रेरणादायक व सामयिक लगे। लेखिका को बहुत-बहुत साधुवाद। वास्तव में इस प्रकार के लेख आजकल के युवक व युवतियों के लिए जीवनपथ पर चलने के लिए मील का पत्थर का कार्य करेंगे। यह बिल्कुल सही है कि अगर मनुष्य संकल्प व दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ काम करे व असफलता से ना डरे तो वह कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त कर सकता है। किसी ने कहा भी है- सफलता के लिए लक्ष्य भी आवश्यक है। जिनका ध्येय नहीं जीवन में ऐसे ही बह जाते हैं-जैखे लाख हजारों पत्ते नदियों में बह जाते हैं।

- सूबेदार मेजर (रि.), नन्नूराम डाँगी, आर्य कन्या गुरुकुल, हसनपुर (पलवल), हरियाणा - १२११०७

२. माननीय सम्पादक प्रो. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते।

परोपकारी, पाक्षिक, नवम्बर (द्वितीय) २०१३ में आपके द्वारा प्रकाशित सम्पादकीय के अन्तर्गत 'न्याय की शवयात्रा' पढ़ने के उपरान्त मुझे ऐसी अनुभूति हुई मानो कोई पुराना जख्म उभर आया हो। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी और उनके परम शिष्य पं. लेखराम जी ने स्पष्ट लिखा है कि भारतवासियों के लिए 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग किसी भी प्राचीन ग्रन्थ में नहीं है और यवनादि ने आर्यवासियों के लिए गुलाम, काफिर और कलंकरूप में इस शब्द का प्रयोग किया है किन्तु फिर भी हिन्दुओं के धर्मवेत्ता यह नारा देते हैं 'गर्व से कहो, हम हिन्दू हैं।' डा. भीमराव अम्बेडकर ने हिन्दू की तुलना बिल में घुसे चूहे से की है। हिन्दुओं में स्वाभिमान जगाने के लिए आर्यत्व के गुणों से ओतप्रोत गुरु तेगबहादुर साहब ने आत्मबलिदान किया, उनके बहादुर सुपूत और सिक्खों के लिए दशमेश नामक विशेषता से अलंकृत श्री गोविन्द सिंह जी ने सपरिवार आहुति दी, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी, पं. लेखराम जी, महाशय राजपाल जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी और अनेक आर्यजनों ने हिन्दुओं को सचेत करके अपने पूर्वजों की गौरवमयी स्थिति पर पहुँचाने के लिए सब कुछ किया।

- राजेन्द्र सिंह आर्य, मोखरा, रोहतक, हरियाणा

३. आदर एवं सम्मान के अधिकारी डॉ. साहब प्रो. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते।

सौभाग्य से मैं आपकी पाक्षिक पत्रिका 'परोपकारी' का आजीवन सदस्य सं. ८२६४ हूँ और आपका सम्पादकीय विशेष तौर से पढ़ने के लिए तड़पता रहता हूँ।

- अशोक गोयल, ५२५/२३, गली आरे वाली, काठ मण्डी, सोनीपत-१३१००१ (हरियाणा)

४. आदरणीय डॉ. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते। आपका मार्च प्रथम २०१४ अंक प्राप्त हुआ धन्यवाद। आपका सम्पादकीय पढ़ा 'आप हैं कौन?' बहुत ही अच्छा लगा। इस लेख का प्रचार होना भी समयानुकूल ही होगा ताकि दूध का दूध और पानी का पानी हो सके। 'आप' पार्टी की कार्य प्रणाली जन सामान्य को अच्छी लगती है परन्तु इस बात को सामान्य रूप से नहीं जाना गया।

- सत्यपालसिंह आर्य, ओ३म् निवास, एल-३०, शास्त्री नगर, मेरठ (उ.प्र.)

आर्यजगत् के समाचार

१. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- श्रुति विज्ञान आचार्य कुलम्, ग्राम छपरा, शाहाबाद मारकण्डा, कुरुक्षेत्र का आठवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ८ एवं ९ मार्च को सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज की गतिविधियों की दृष्टि से पिछड़े हुए इस क्षेत्र में श्रुति विज्ञान आचार्य कुलम् एक महत्त्वपूर्ण कार्य में संलग्न है इस कारण क्षेत्र की जनता धीरे-धीरे गुरुकुल से जुड़ती जा रही है सो इस कार्यक्रम में शाहाबाद के अतिरिक्त अम्बाला, कुरुक्षेत्र, नारायणगढ़, लाडवा, रादौर, यमुनानगर, करनाल, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद, दिल्ली आदि के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण छोटे-छोटे ब्रह्मचारियों के प्रवचन, भजन एवं व्यायाम प्रदर्शन रहे। आचार्य रवीन्द्र जी एवं आचार्य सुश्रुत् सामश्रमी ने अपने प्रवचनों द्वारा सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

२. स्थापना दिवस मनाया- नवसम्वत्सर पर्व-आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आर्यसमाज गंगापुर सिटी, जि. सवाई माधोपुर, राज. में पर्यावरण शुद्धि एवं सभी प्राणियों के स्वास्थ्य की सुख-समृद्धि के लिये वैदिक मन्त्रों के द्वारा हवन किया गया एवं व्यापार मण्डल चिकित्सालय तिराहे तथा उदेई मोड चौराहे पर सभी नगरवासियों के रोली-तिलक-चावल लगाकर हार्दिक स्वागत करते हुए नवसम्वत्सर पर्व की शुभकामनाएँ दी गई। इस अवसर पर आर्यवीर दल राजस्थान द्वारा प्रकाशित 'महर्षि दयानन्द एक विचार' लघु पुस्तिका का विमोचन ब्र. नन्दकिशोर आर्य, हरिद्वार द्वारा किया गया। जिसे आम नागरिकों को वितरित की गई।

३. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर, उ.प्र. का ८६वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। वैदिक विद्वान् प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने कहा कि महर्षि दयानन्द महान सुधारक वेदों के पुनरुद्धारक एवं स्वदेश प्रेम की अलख जगाने वाले निर्भीक संन्यासी थे। उन्होंने सोते भारत को जगाया। सभा का संचालन आर्यसमाज के प्रधान व मन्त्री क्रमशः आनन्दपाल सिंह आर्य व आर.पी. शर्मा ने किया। जनपद की अनेकों आर्यसमाजों व जनता ने उत्सव में भाग लिया।

४. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज शान्तिनगर, निम्बाहेड़ा द्वारा १४०वाँ स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मनाया। आर्यसमाज के मन्त्री रविन्द्र साहू के अनुसार भारतीय नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस ३१ मार्च को आर्यसमाज से प्रातः प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। यज्ञ के अन्त में श्री उमरावसिंह भाटी ने भारतीय काल गणना के अनुसार बताया कि सृष्टि की निर्माण को आज एक अरब छियानवें करोड़ आठ लाख तरेपन हजार एक सौ चौदह वर्ष हो चुके हैं। उन्होंने नवसंवत्सर एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्यसमाज की स्थापना पर भी प्रकाश डाला। जावदा में सागरमल मेनारिया के नेतृत्व में भी भारतीय नववर्ष के साथ आर्यसमाज का स्थापना दिवस यज्ञ के साथ मनाया।

५. स्थापना दिवस सम्पन्न- ३१ मार्च २०१४ को आर्यसमाज रामपुरा द्वारा संचालित मातृ सेवा सदन बालिका प्राथमिक विद्यालय, रामपुरा, कोटा, राजस्थान एवं बाल भारती आर्य शिशुशाला द्वारा संयुक्त रूप से आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। विद्यालय के व्यवस्थापक डी.पी. मिश्रा ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करके बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैदिक विद्वान् श्री शिवनारायण उपाध्याय ने की।

६. होलिकोत्सव मनाया- १७ मार्च को आर्यसमाज यमलार्जुनपुर, कैसरगंज, बहराइच, उ.प्र. के तत्त्वावधान में होलिकोत्सव पर्व हरीश मिश्र आर्य के जमालुद्दीनपुर स्थिति आवास पर मनाया गया। जिसमें कार्यक्रम की अध्यक्षता धर्मवीर आर्य प्रधान, संचालन डॉ. सत्यमित्र आर्य मन्त्री, कार्यक्रम का प्रारम्भ में ध्वजारोहण के पश्चात् यज्ञ हुआ। यज्ञ के यजमान हरीश मित्र आर्य रहे। यज्ञ के पश्चात् आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री धर्मदेव आर्य का प्रवचन हुआ।

७. नव सम्वत्सर मनाया- महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर, राजस्थान पर स्थित आर्यसमाज में आयोजित नव सम्वत्सर और आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी कर्मवेश, आचार्य शिव कुमार शास्त्री ने भाग लिया। भारतीय परम्परा में नववर्ष का शुभारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को माना जाता है। नव सम्वत् २०७१ का अभिनन्दन प्रातः वैदिक मन्त्रों की आहूति देकर यज्ञ के द्वारा किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र से पधारे डॉ. बसन्त कुमार अकोला, श्री उदयशंकर व्यास, डॉ. मन्जू गुप्ता ने नव सम्वत्सर की तात्त्विक व्याख्या प्रस्तुत की।

८. स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित- सभी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि पण्डित रविदत्त वैद्य, ब्यावर, राजस्थान स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। पण्डित जी लाहौर के उपदेश विद्यालय के स्नातक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ सदस्य रहे। राजस्थान प्रदेश भारतीय जनसंघ के भी वे तीन बार अध्यक्ष रहे। उनके संस्मरण एवं चित्र जिनके पास हो निम्नलिखित पते पर सूचना पाने के १५ दिन के भीतर भेजने की कृपा करें।

सुनील आर्य, क्रॉकरी शोरूम, आर्यसमाज मार्ग, महर्षि दयानन्द कल्याण महाविद्यालय व एस.बी.आई. सान्ध्य बैंक शाखा के सामने, ब्यावर, जि. अजमेर, राजस्थान

ई-मेल- manjulavisht08@gmail.com

९. श्रीराम जयन्ती मनाई- आर्यसमाज हिरण मगरी, उदयपुर, राजस्थान की ओर से श्रीराम नवमी/श्रीराम जयन्ती के अवसर पर हुई सत्संग सभा में श्री राम का गुणगान किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने श्रीराम के जीवन चरित्र, मर्यादाओं को जीवन में अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया व आर्यसमाज के प्रधान श्री भंवरलाल आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

१०. नवसम्वत्सर यज्ञ- वैदिक नवसम्वत्सर २०७१ के आगमन पर चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, सोमवार, ३१ मार्च २०१४ को आर्यसमाज शृंगार नगर, लखनऊ, उ.प्र. के तत्त्वावधान में निकटवर्ती पार्क में, १०१ कुण्डीय यज्ञ किया गया। यज्ञ के संचालक पं. रूपचन्द्र दीपक रहे।

११. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर पुंजला, जोधपुर, राजस्थान में भारतीय नववर्ष व आर्यसमाज स्थापना दिवस कि पूर्व सन्ध्या पर ईश्वर भक्ति भजनों के द्वारा प्रस्तुति की गई। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विजयसिंह भाटी ने आये हुए सभी आगन्तुकों को नववर्ष व आर्यसमाज स्थापना दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएँ दी व आने वाला नववर्ष सभी देशवासियों को खुशहाली प्रदान करें ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं। मंच संचालन श्री धीरेन्द्रसिंह भाटी ने किया।

१२. अभिनन्दन उत्सव सम्पन्न- राजस्थान से लगे हुए इस मालवा क्षेत्र में मन्दसौर जिले के पिपलिया मण्डी के खेड़ा खदान ग्राम में वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया। प्रतिदिन प्रात: व रात्रि में सभा होती थी। पण्डित श्री सत्यपाल सरल, देहरादून, पण्डित श्री शंकर मित्र वेदालंकार, कासगंज, पण्डित श्री कमल किशोर आर्य, बेरसिया, भोपाल तीन सुयोग्य भजनोपदेशक भजनों के माध्यम से अपनी बात को विभिन्न सत्रों में रखते थे। दैनिक यज्ञ में वेद पाठ का कार्य बूढ़ा ग्राम के आर्य विद्या मन्दिर के धर्म शिक्षक व आर्यसमाज के पुरोहित श्री रघुवीर शास्त्री एवं श्री जय प्रकाश ने निभाया। यज्ञ सहित सभी सत्रों के अन्त में आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी का सिद्धान्त विषयक उपदेश होता था। अन्तिम दिन १९ वेदियों पर ४८ दम्पत्तियों द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति की गई।

१३. प्रवेश सूचना- आर्ष कन्या गुरुकुल हजारीबाग, झारखण्ड में १० से १२ वर्ष की कन्याओं का १ जून २०१४ को साक्षात्कार के साथ प्रवेश दिया जाएगा। २५ मई तक प्रवेश-पत्र भरकर गुरुकुल कार्यालय में जमा कराएँ। नियमावली एवं प्रवेश-पत्र के लिए सम्पर्क करें।

आवश्यकता- १. आर्ष कन्या गुरुकुल, हजारी बाग के लिए अध्यापिकाओं की आवश्यकता है। २. बालकों के लिए नवीन गुरुकुल हेतु आचार्य एवं अध्यापकों की आवश्यकता है। **सम्पर्क- प्राचार्या पुष्पा शास्त्री- ०६५४६-२६३७०६, ०९४३०३०९५२५**

वैवाहिक

१४. जन्म- १५/४/१९७९, रंग-साफ, कद-५ फुट २ इंच, शिक्षा- एम.ए., बी.एड., एम.फिल., पीएच.डी. कन्या, गोत्र- गुलियां, जटराणा, कुण्डू, जो कि दिल्ली में राजकीय इन्टर स्कूल में सेवारत है, के लिए आर्य परिवार के (एन.सी.आर.) के आसपास रहने वाले पठित व सेवारत युवक की आवश्यकता है। **सम्पर्क- ०११-६५८७९६५०**

१५. जन्म- ९/६/१९९०, कद- ५ फुट ६ इंच, शिक्षा- एम.ए., बी.एड., निवासी- ग्रेटर नोयडा को आर्य विचारों अथवा जांगिड़ ब्राह्मण परिवार का वर चाहिए। **सम्पर्क- ०९४५६२७४३५०, मेल shrutichoyal12@gmail.com**

चुनाव

१६. आर्यसमाज सूरसागर, जोधपुर, राजस्थान के चुनाव में **प्रधान**- श्री किशनलाल गहलोत, **मन्त्री**- श्री नरसिंह सोलंकी, **कोषाध्यक्ष**- श्री नरपतसिंह गहलोत को चुना गया।

१७. जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा भरतपुर, राजस्थान के चुनाव में **प्रधान**- श्री गिर्राज प्रसाद शर्मा, **मन्त्री**- श्री बलवीरसिंह, **कोषाध्यक्ष**- श्री सत्यदेव आर्य को चुना गया।

१८. आर्यसमाज सज्जननगर, उदयपुर, राजस्थान के चुनाव में **प्रधान**- श्री हुकमचन्द शास्त्री, **मन्त्री**- श्री सौरभदेव आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री अशोक उदावत को चुना गया।

महर्षि दयानन्द के जीवन की झलकियाँ

कविराजा श्यामलदास प्रथम मन्त्री परोपकारिणी सभा

कविराजा श्यामलदास दधिवाड़िया गोत्र के चारण थे। इनका जन्म आषाढ़ कृष्ण ७, सं. १८९३ वि. को हुआ था। ये संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी (डिंगल) आदि भाषाओं के मर्मज्ञ थे। उदयपुर महाराणा ने इन्हें पौष शुक्ला २, सं. १९३५ को 'कविराजा' की उपाधि प्रदान की। अंग्रेजी सरकार ने भी १ जनवरी १८८८ ई. को 'महामहोपाध्याय' की पदवी प्रदान कर कविराजा जी को सम्मानित किया। कविराजा श्यामलदास की प्रमुख कृति 'वीर विनोद' नामक मेवाड़ राज्य का बृहद् इतिहास है, जो लगभग ३ हजार पृष्ठों में लिखा जाकर १९४६ वि. में तैयार हुआ। ज्येष्ठ बदि ३०, सं. १९५१ को इनका निधन उदयपुर में हुआ।

यद्यपि कविराजा जी को सभा के मन्त्री पद पर स्वामी जी ने ही प्रतिष्ठित किया था, परन्तु वे अपनी अस्वस्थता के कारण इस कार्य का वहन भली-भाँति नहीं कर पाये। सभा के द्वितीय अधिवेशन (दिसम्बर १८८५ ई.) में उन्होंने अपना त्याग-पत्र प्रस्तुत किया, जिसे खेदपूर्वक स्वीकार कर लिया गया। कविराजा जी का स्वामी जी से अत्यन्त सौहार्दभाव था। जिस समय स्वामी जी प्रथम बार चित्तौड़गढ़ पधारे, उसी समय कविराजा जी से उनका साक्षात्कार हुआ था तथा वे श्री महाराज के तेजस्वी विचारों तथा ओजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित हुये थे। महाराणा उदयपुर, राजाधिराज शाहपुरा तथा मेवाड़ के अन्य सरदारों को स्वामी जी की शिक्षाओं की ओर अभिमुख करने तथा उनके सम्पर्क में आने की प्रेरणा भी कविराजा जी ने ही दी थी।

"परोपकारिणी सभा का इतिहास" से साभार।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकट

Design@ Mittal 9829797513